वैश्विक नियोग II

वैश्विक नियोग II: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. इतिहास व संरचना।

कक्षा #२:

II. शेष बचा हुआ कार्य।

कक्षा #३:

III. सुसमाचार से वंचित लोगों तक पहुंचना।

कक्षा #४:

IV. सुसमाचार प्रचार, विकास और कलीसिया रोपण।

कक्षा #५:

IV. सुसमाचार प्रचार, विकास और कलीसिया रोपण। (जारी।)
V. वैश्विक मसीहियों का सामुहिक कार्य।
परीक्षा।

वैश्विक नियोग II

टिप्पणियाँ -

वैश्विक नियोग II: परीक्षा

सम्भावित २० सूत्रीय प्रश्न

१) १९वीं शताब्दी की नियोग की रणनीतियों का वर्णन करें और बताएं कि वे आज भी किस तरह से बाइबल आधारित और महत्वपूर्ण हैं (पृष्ठ १३८)।

२) "आदिवासियों के विशाल दायरे" का वर्णन करें और उनके बीच में सुसमाचार प्रचार करने के तरीके बो बारे में बताएं (पृष्ठ १५३)।

३) हम क्यों कह सकते हैं कि संसार में वास्तव में दो धर्म हैं? इससे वैश्विक सुसमाचार प्रचार पर क्या प्रभाव पड़ता है (पृष्ठ १५३,१५४)।

४) नियोग के "उचित लक्ष्यों" पर चर्चा करने के लिए मत्ती २८:१९,२० पर चर्चा करें।

५) पैटर्सन के कलीसिया के स्वाभाविक तौर पर बढ़ने के प्रथम सिद्धान्त का वर्णन करें। जिसका अर्थ है, कि व्याख्या करो कि उसके द्वारा "खेतों को देखो" कहे जाने का क्या अर्थ है (पृष्ठ १६७,१६८)।

६) प्रभावशाली योजनाओं और अप्रभावशाली योजनाओं के बीच अन्तर का वर्णन करते हुए कलीसिया रोपण में प्रजनन पर चर्चा करें (पृष्ठ १७२,१७३)।

सम्भावित १० सूत्रीय प्रश्न

१) "योजना" को परिभाषित करें (पृष्ठ १३२)।

२) एक ऐसे तरीके का वर्णन करें जिसमें योजनाएं हमारी मदद कर सकें (पृष्ठ १३३,१३४)।

३) "राष्ट्र" बाइबल आधारित अर्थ बताएं (पृष्ठ १४३)।

४) "छोटे दायरे" का एक उदाहरण दें (पृष्ठ १४४)।

५) "E (ई)-१" और "E (ई)-२" या "E (ई)-३" के प्रचार में क्या प्रमुख अन्तर है (पृष्ठ १४४)?

६) तीन तरह की सांस्कृतिक बाधाओं की सूची लिखें (पृष्ठ १४६)।

७) बौद्ध धर्म का संक्षिप्त में वर्णन करें (पृष्ठ १४८)।

८) एक कारण बताएं कि क्यों किसी चीनी व्यक्ति को सुसमाचार सुनाना बहुत कठिन काम है (पृष्ठ १४९)।

९) बड़ा असन्तुलन क्या है (पृष्ठ १५१)?

१०) दो सर्वाधिक बुनियादी और अनोखी चीज़ें क्या हैं जो मसीहीयत सारे लोगों को दे सकती है (पृष्ठ १५३)?

११) "लोगों को आन्दोलन" क्या है (पृष्ठ १५९)?

१२) विकास की एक योजना का वर्णन करें (पृष्ठ १६५)।

वैश्विक नियोग II

टिप्पणियाँ -

वैश्विक नियोग के पाठ्यक्रमों की श्रृंखला:

वैश्विक नियोग श्रृंखला में तीन पाठ्यक्रम हैं। ये योनातन लूइस द्वारा सम्पादित श्रृंखला पर आधारित और वहीं से लिए गए हैं। यह श्रृंखला स्पैनिश भाषा में उपलब्ध है और इसे विलियम कैरी लाइब्रेरी के प्रकाशक, पो.बॉ. संख्या ४०१२९, पासाडेना, CA (सीए) ९१११४ (८१८-७९८-०८१९) से मंगाया जा सकता है।

इन सामग्रियों को इस्तेमाल "अनुमति द्वारा" किया जा रहा है।
तीन वैश्विक नियोग के पाठ्यक्रम निम्नलिखित हैं:

१. वैश्विक नियोग I - बाइबल आधारित/ऐतिहासिक नींव

२. वैश्विक नियोग II - योजनाबद्ध आयाम[१]

३. वैश्विक नियोग III - विविध-संस्कृतियों का आयाम

I. इतिहास व संरचना।

क. नियोग के इतिहास का अद्यतन।

१. इतिहास इस बात का लेखा है कि परमेश्वर ने एक जाति के लोगों को बचाने के लिए और पृथ्वी पर अपने व्यवस्था को स्थापित करने के लिए किस तरह कार्य किया।

२. परमेश्वर ने यह काम उन्हीं लोगों में से एक व्यक्ति को चुनकर किया जिन्हें उन्होंने छुड़ाया। दुर्भाग्य से, इन लोगों ने हमेशा सहयोग नहीं किया। इन समयों में परमेश्वर ने निर्वासन, सताव, फैलाव और आक्रमणों के माध्यम से अपने उद्देश्य को पूरा किया।

३. उसके बाद, परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर की बुलाहट का प्रतिउत्तर दिया। उन्होंने ऐसी संरचनाओं और आन्दोलनों का निर्माण किया जिन्हें राष्ट्रों में परमेश्वर के सुसमाचार को फैलाने के लिए तैयार किया गया था। परमेश्वर ने इन आन्दोलनों को आशीष दी।

४. इन दो शताब्दियों में, प्रोटेस्टेंट नियोग के आन्दोलनों में अद्भुत रीति से बढ़ौत्तरी हुई थी। वर्तमान में, हम उस काल में रह रहे हैं जिस नियोग के जानकार आधुनिक नियोग के विस्तार का तीसरा काल कहते हैं।

क. नियोग का यह काल संसार भर में वचन से वंचित रहने वाले या "ओझल" लोगों पर ध्यान केन्द्रित करता है।

ख. वे सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषा की बाधाओं के वजह से ओझल हैं।

टिप्पणियाँ -

५. इन "ओझल" लोगों तक किस प्रकार पहुंचा जाएगा?

क. बहुत मिशन के जानकार यह मानते हैं कि विकासशील देशों की नई व स्वस्थ कलीसियाएं बड़ी भूमिका को अदा करेगी।[२]

ख. फिर भी, हमें योजनाओं में पायी जाने वाली त्रुटियों को दूर करना चाहिए। हमें अपनी गलतियों से सीखना चाहिए। हमें प्रभावशाली और सफल योजनाओं को बनाना चाहिए।

ख. नियोग में योजनाबद्ध आयाम।

१. क्या योजना पवित्र आत्मा की अगुवाई को नकारती है?

क. यदि कोई योजना केवल लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक मानवीय प्रयास है तो उत्तर हां है। इसका परिणाम व्यर्थता हो सकता है (भजन १२७:१)।

ख. लेकिन, योजना को पवित्र आत्मा की अगुवाई में भी बनाया जा सकता है। हमें परमेश्वर ने अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करने के लिए बनाया है। हमें उन चीज़ों का इस्तेमाल करना चाहिए जिन्हें हमने बीते समय में सीखा है और उसके आधार काम करने वाली योजनाओं को बनाना चाहिए। यह काम पवित्र आत्मा की अगुवाई और उसकी समझ पर निर्भर होकर किया जाता है।

ग. तोड़ों के दृष्टान्त से मिलने वाली शिक्षा को याद रखें (मत्ती २५:१४-३०)।

१) भण्डारियों ने योजना बनाई। लेकिन एक ने कोई योजना नहीं बनाई।

२) हम उस दृष्टान्त के परिणाम को जानते हैं। योजना तैयार करना बहुत महत्वपूर्ण है।

२. योजना या रणनीति क्या है?

क. पीटर वागनर, नियोग के अच्छे जानकार, कहते हैं कि रणनीति "लक्ष्य तक पहुंचने के लिए तय किया गया तरीका है"।

ख. किसी लक्ष्य को हम किस प्रकार से प्राप्त करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर ही हमारी रणनीति या योजना को परिभाषित करता है। हमारे पास हर चीज़ के लिए एक योजना होती है। प्रश्न यह नहीं है कि क्या हम योजना का इस्तेमाल करेगें। प्रश्न यह है कि "क्या हम उत्तम योजना का इस्तेमाल करेंगे?"

ग. हम निम्नलिखित तरीके से एक योजना का मूल्यांकन कर सकते हैं।

१) क्या यह बाइबल आधारित है? निश्चय तौर पर, यह कहने के लिए कि कोई योजना पवित्र आत्मा की अगुवाई में तैयार की गयी है उसका बाइबल आधारित होना बहुत ज़रूरी है।

टिप्पणियाँ -

२) क्या यह सफल है? एक अच्छी योजना जरूरतों और स्रोतों दोनों को परिभाषित करती है। यहां पर हमें प्राथमिकताओं पर बातचीत करनी चाहिए। हमें चुनाव करना चाहिए।

३) क्या यह प्रभावशाली है? एक अच्छी योजना प्रायः कार्य करती है। यह फल देगी। उसके द्वारा आपको स्वाभाविक परिणाम प्राप्त होंगे।

क) यह पर हमें ध्यान रखना चाहिए कि क्या योजना प्रासंगिक है। एक योजना समय और परिस्थिति को लेकर प्रासंगिक होनी चाहिए। जो योजना २५ वर्षों पहले किसी स्थान पर सफल रही थी सम्भवतः वह दूसरी जगह पर सफल न रहे।

ख) यहां पर हमें वैश्विक नियोग I का कथन याद आ जाता है: "सुसमाचार की विषय वस्तु कभी नहीं बदलती। सुसमाचार को बताने का तरीका बदलता है।"

घ. योजना में विवरण की परवाह नहीं की जाती। यह किसी कार्य को करने का सामान्य विचार, तरीका या रीति होती है। सामान्य योजना के अनुसार दैनिक गतिविधियां बदलेंगी। लेकिन सम्पूर्ण योजना जैसी की तैसी ही बनी रहेगी।

१) पौलुस की रणनीति में शहरों में जाना, आराधनालयों में प्रचार करना, और वहां पर मिलने वाले परिणामों के आधार पर आगे बढ़ना शामिल था (प्रेरितों १७:२)।

२) हर परिस्थिति में मिलने वाले परिणामों को विवरण अलग था। सामान्य योजना या रणनीति अपरिवर्तित ही बनी रहती है।

३. रणनीतियां किस प्रकार से हमारी सहायता करती हैं?

क. रणनीतियां तैयार करते समय प्रार्थना के साथ परमेश्वर पर निर्भर होने की जरूरत पड़ती है। रणनीतियां बाइबल अध्ययन, परामर्श और प्राथना और परमेश्वर के साथ अनुभवों पर आधारित होती है।

ख. रणनीति तैयार करने के लिए विश्वास के अभ्यास की आवश्यकता होती है। विश्वास के समान, योजनाएं भी स्वभाव ही से, भविष्य पर आधारित होती हैं। विश्वास की आवश्यकता केवल योजना तैयार करने के लिए ही नहीं, वरन उस योजना को अमल में लाना भी विश्वास के द्वारा होना चाहिए।

ग. योजनाएं वे उपकरण या उपाय है जो दूसरों को समझाने और भरोसा करने में सहायता करती है कि हम परमेश्वर के साथ भागीदारी कर रहे हैं। हम सेवाकाई की योजनाओं, सेवकाई के दर्शन, लक्ष्य आदि के बारे में बताने के लिए रणनीति का इस्तेमाल कर सकते हैं।

टिप्पणियाँ -

घ. योजना हमें एक दिशा रखने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह हमें दर्शन और काम करने वाले लोग होने में मदद करती है। एक विशेष रणनीति में अन्य सभी योजनाओं को छोड़ देती है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। हमें सकेन्द्रित होना चाहिए। एक व्यक्ति जो कहता है कि उसके पास सारी चीज़ों के लिए दर्शन है वास्तव में उसके पास किसी चीज़ के लिए दर्शन नहीं है। ऐसे लोगों किसी एक जगह पर सकेन्द्रित नहीं हैं। वे सारे कामों में अपने हाथ डाल तो लेते हैं लेकिन वे किसी काम को पूरा नहीं कर पाते। उनके पास कोई रणनीति नहीं होती।

४. अलग अलग प्रकार की योजना में से कुछ योजनाएं क्या हैं?

क. "सामान्य समाधान" योजना। इस योजना के अन्तर्गत किसी को काम करने का एक सामान्य विशेष निर्धारित किया जाता है। उसके बाद किसी भी परिस्थिति में काम करने के लिए एक ही योजना का इस्तेमाल किया जाता है।

ख. "एक रास्ते में" योजना। इस योजना में ऐसा प्रतीत होता है कि कोई रणनीति या योजना है ही नहीं। इसमें भविष्य को लेकर कोई योजना नहीं है। इसमें अनुमान लगाया जाता या विश्वास किया जाता है कि जब समय आएगा तब परमेश्वर आपको अगले कदम की ओर अगुवाई करेगें।

ग. "उतनी ही योजना बनाएं जितना आपको दिखता है" योजना। यह रणनीति कियी कार्य को प्रारम्भ करने का विचार करती है। परमेश्वर योजना को पूरा करेगें। इस संकेन्द्र परिणाम की बजाय प्रारम्भ होता है।

घ. "अनोखा समाधान योजना"। यह योजना मानती है कि हर एक परिस्थिति अपने आप में अलग होती है। प्रत्येक परिस्थिति के लिए एक अलग योजना होनी चाहिए।

ङ. कुल मिलाकर, "अनोखा समाधान योजना" एक मज़बूत योजना होती है। हालांकि इस बात पर बहस की जा सकती है कि अन्य तीन योजनाओं में से कोई भी एक किसी विशेष परिस्थिति के लिए "अनोखा समाधान" हो सकती है।

१) याद रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें पवित्र आत्मा द्वारा अगुवाई पाया हुआ होना चाहिए। इसके कार्य और निर्णय शामिल होते हैं। हमें सन्तुलित होना चाहिए।

२) किसी ने ऐसा कहा, "हमें इस तरह से प्रार्थना करनी चाहिए मानों हम कोई योजना नहीं बना सके, और ऐसे योजना बनानी चाहिए मानो हम प्रार्थना नहीं कर सके।"

टिप्पणियाँ -

ग. नियोग योजना का इतिहास।

लेखक की टिप्पणी:

हम नियोग से जुड़ी रणनीतियों या योजनाओं के बारे में उसके इतिहास का अध्ययन करके जान सकते हैं (मत्ती १३:५२)। निम्नलिखित बिन्दू ८वीं शताब्दी से लेकर आधुनिक काल तक नियोग के इतिहास का वर्णन करते हैं।

१. आठवीं शताब्दी में, इंगलैण्ड से मिश्नरी यूरोप में गये। उनकी अगुवाई बोनीफेस नामक एक मिश्नरी कर रहा था, जिसने विविध तरीकों का इस्तेमाल किया।

क. उन्होंने एक ऐसी भाषा का इस्तेमाल किया जिसे लोग समझ सकते थे।

ख. उन्होंने लोगों को शिक्षा दी और उन्हें बसने में सहायता की।

ग. उन्होंने मूर्तिपूजकों के विरूद्ध आक्रामक रूप धारण किया।

घ. उन्हें "घरेलू" कलीसियाओं से समर्थन प्राप्त हुआ।

२. क्रूसेड्स (धार्मिक सभाएं)।

क. एक अगल रणनीति। क्रूसेड्स (मुसलमानों के विरूद्ध यूरोप में लड़ाईयों) के कारण वास्तव में मुसलमानों के बीच में सुसमाचार प्रचार का कार्य बाधित हुआ। आज के दिन तक मुसलमान, मसीहियों से नफरत करते हैं।

ख. फिर भी, क्रूसेड्स से कुछ सकारात्मक बातें सामने आई।

१) असीसी का फ्रांसिस, अपने शान्ति और प्रेम के आन्दोलन के तहत मुसलमानों के बीच में गया।

२) रामोन लुल ने मुसलमानों तक पहुंचने के लिए उनसे बहस करने का सहारा लिया।

३. उपनिवेशी विस्तार।

क. १६वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी के बीच में मसीहीयत एक विश्वव्यापी धर्म बना गया। जैसे जैसे पौर्चयूगीस, स्पैनिश और फ्रैंच के सम्राट अज्ञात देशों में पहुंचते चले गये, वे अपने साथ साथ मसीहीयत को भी अपने साथ ले गए।

ख. अनेकों मिशन रणनीतियों का इस्तेमाल किया गया। लेकिन, सामान्यतः, देशों, लोगों और संस्कृतियों पर कब्ज़ा करना आम बात मगर एक दुखद रणनीति थी।

टिप्पणियाँ -

४. १७वीं शताब्दी में नियोग की रणनीतिकार।

क. नियोग के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए रोमन कैथलिक की ओर से एक नियमावली लिखी गयी।

ख. जेज्यूट्स अवतरणीय नियोग के प्रवर्तक बन गये। वे स्वदेशीकरण के लिए रणनीति तैयार करने लगे।

ग. वे चीन, जापान और भारत में गये और वहां के लोगों के समान ही बोलने और वस्त्र धारण करने लगे। उन्होंने बहुत से स्थानीय रीतियों को धारण कर लिया और वे उन लोगों में विश्वास करने वाले लोगों को खोजने लगे जो अपने ही स्थानीय क्षेत्रों में रहना चाहते थे।

घ. उन्होंने "दानिय्येल" कहलाने वाली रणनीति का अभ्यास करने के लिए अपनी उत्तम शिक्षा और प्रशिक्षण का इस्तेमाल किया। दानिय्येल के समान, उन्होंने अपने सामाजिक पदों के द्वारा अपने आप पास के लोगों को प्रभावित किया। समाज में उन्हें ये पद उनकी शिक्षा और योग्यता की वजह से दीये गये थे।

५. न्यू इंग्लैण्ड प्यूरिटंसः अमेरिकन भारतियों के लिए मिशन।

क. प्यूरिटंस अमेरिका के कुछ मूल उपनिवेशक थे। वे अमेरिका में इसलिए आये थे, क्योंकि वे उस समय के इंगलैण्ड की कलीसिया की लौकिकता से "शुद्ध" होना चाहते थे।

ख. यहां से प्रोटेस्टेंट मिशन का प्रारम्भ हुआ था (१७वीं शताब्दी)। अमेरिकी वासियों के वहां बसने का परिणाम भारतियों को मन परिवर्तन हुआ।

ग. प्यूरिटंस मिश्नरी विभिन्न रणनीतियों को तैयार करने लगे।

१) सार्वजनिक तौर पर प्रचार के माध्यम से सुमाचार सुनाना।

२) कलीसियाओं को व्यवस्थित करना।

३) मसीही नगरों को व्यवस्थित किया गया और जिसने नये मसीहियों को उनके अपने लोगों से अलग कर दिया।

४) लोगों के बसाने और उन्हें शिक्षित करने पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।

५) साहित्यिक सेवकाई में इस्तेमाल की जाने वाले पुस्तकों और बाइबल का अनुवाद किया जाने लगा।

६) स्थानीय भाषा का इस्तेमाल किया गया।

७) स्थानीय सेवकों को प्रशिक्षित किया गया।

टिप्पणियाँ -

६. डैनिश-हालैमिशन (डेनमार्क विश्विद्यालय के विद्यार्थी)।

क. नियोग द्वारा प्रतिनिधियों के भेजे जाने का विचार तब प्रारम्भ हुआ जब डेनमार्क के राजा ने भारत में मिश्नरियों को भेजा।

ख. मिश्नरियों ने चिकित्सा सम्बन्धी कामों और शिक्षा का इस्तेमाल किया और स्थानीय धर्मों को समझने का प्रयास किया तथा अन्य योजनाओं का उपयोग किया।

७. मोरावियन मिशन (अर्थात मोरावियों के निवासियों द्वारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन- जो आज जर्मनी का हिस्सा है)।

क. मोरावियन मिशन आन्दोलन ने १८वीं शताब्दी में आधुनिक "गुप्त लोगों" नामक आन्दोलन की बुनियाद रखी थी।

ख. उन्होंने सर्वाधिक तुच्छ जाने वाले लोगों और भुलाए गये लोगों तक पहुंचने पर ज़ोर डाला।

ग. उन्होंने "तम्बू बनाने" वाली योजना का भी इस्तेमाल किया (अर्थात ऐसे मिश्नरी जो आर्थिक क्षेत्र में आत्म निर्भर थे)।

८. प्रोटेस्टेंट मिशन की महान शताब्दी।

क. १९वीं शताब्दी में नियोग और उससे सम्बन्धित योजनाएं तैयार करने में अत्यधिक प्रगति हुई।

ख. इस काल में अनेकों नियोगी समीतियां और विद्यार्थियों के आन्दोलन उभरकर सामने आए।

ग. इस बारे में एक बहुत बड़ी बहस हुई कि नियोग में किस चीज़ को प्राथमिकता देनी चाहिएः सम्यता को या मसीही बनाने को।

घ. सामाजिक सुधार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा था।

ङ. स्थानीय कलीसियाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए योजनाओं को बनाना प्रारम्भ कर दिया गया था।

च. लेकिन, केन्द्रिय योजना केन्द्र की रणनीति का उपयोग फिर भी हो रहा था।

टिप्पणियाँ -

९. १९वीं शताब्दी की नियोग योजनाएं।

क. "तीन स्व" योजनाओं को प्रारम्भ हुआ। ऐसी कलीसियाओं का निर्माण हुआ जोः

१) स्व-शासित।

२) स्वावलम्बी।

३) स्व-प्रचारित।

ख. सारा ध्यान उस परिवर्तनकारी प्रभाव पर दिया जा रहा था जो समाज पर सुसमाचार के द्वारा पढ़ने जा रहा था।

ग. इसके अलावा सहायक सेवकाईयों पर भी ध्यान दिया जा रहा था।

घ. इन में सबसे महत्वपूर्ण मिसियोलोजी अर्थात कलीसिया के मिशन या नियोग का अध्ययन था जो रूफुस एन्डर्सन और हैनरी वैन जैसे लोगों की अगुवाई में विकसित हुआ।

१) एन्डर्सन का नियोग अध्ययन और उनकी योजनाएं प्रेरित पौलुस के आदर्श व नये नियम के गवाहों पर आधारित थीं।

क) नियोगियों का लक्ष्य सुसमाचार से वंचित लोगों तक पहुंचना,सुसमाचार प्रचार करना, और कलीसियाओं को स्थापित करना था।

ख) मिश्नरी या नियोगी कोई पासबान और अधिकारी नहीं था।

ग) लक्ष्य उन लोगों को पकड़ना था जिनका मन परिवर्तित हो और जिनके जीवन में वह परिवर्तन नज़र आए। नियोगियों का लक्ष्य लोगों के सिद्ध होने तक इन्तज़ार करना नहीं था।

घ) कलीसियाओं की स्थापना स्वदेशी अगुवों को साथ लेकर की गयी थी।

ङ) नियोगी अर्थात मिश्नरी उनके साथ केवल एक सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे थे।

२) एन्डर्सन और वैन दोनों ने "जाओ/दो/छोड़ो" की रणनीति पर कार्य किया। उन्हें रोपित की गयी कलीसियाओं में नियोग के दर्शन को जन्म देना था। जितनी जल्दी हो सके नियोगियों अर्थात मिश्नरियों को उस जगह को छोड़कर चले जाना था ताकि वे उसी प्रक्रिया को किसी अन्य सुसमाचार से वंचित स्थान पर पुनः प्रारम्भ कर सकें। नियोग के द्वारा अन्य नियोगों को पैदा होना था।

टिप्पणियाँ -

१०. एक उपनिवेशक मानसिकता।

क. मूल मसीहियों की योग्यता के नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण, नियोग से जुड़े अध्ययन में परिवर्तन होने लगा। मानसिकता यह थी कि सफलता प्राप्त करने के लिए एकमात्र आशा सेवकाई का सारा नियन्त्रण मिश्नरियों को मिल जाए।

ख. यह नियोग से जुड़ी एक दुःखद शिक्षा थी जो हमेशा बढ़ोतरी ओर विकास में अभाव की ओर अगुवाई करती है। नियोग में आज भी यह एक समस्या है।

११. सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और चिकित्सा- १९वीं सदी की इस नियोगी रणनीति का सकेन्द्र सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और चिकित्सा के द्वारा व्यक्तिगत तौर पर लोगों का मन परिवर्तन, कलीसिया रोपण और सामाजिक परिवर्तन था।

१२. शिष्टाचार (पारस्परिक शिष्टाचार)।

क. यहां पर हम "नेटवर्किंग" के एक प्रारूप को देखते हैं।

ख. नियोग का बोर्ड एक साथ मिलकर योजना बनाने लगा। उन्होंने बोर्ड के सदस्यों को भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों का कार्य भार सौंपने के द्वारा अपने संसाधनों को बढ़ाने की योजना बनाई।

१३. परामर्श तथा सम्मेलन- इस प्रकार के सहयोग के लिए संस्था को बड़ी सभाओं को आयोजित करने की जरूरत पड़ी। रणनीतियां, योजनाएं और सहयोगा पर चर्चा की गयी।

१४. द्वितीय विश्व युद्ध से।

क. नियोग से सम्बन्धित सर्वाधिक प्रभावशाली शिक्षा और रणनीति रोनाल्ड ऐलन की रही है। उसने रूफुस एन्डर्सन के कार्यों को आगे बढ़ाया और अपनी रणनीति के लिए पौलुस को आदर्श बनाया।[3]

ख. दुर्भाग्य से, वर्तमान काल में बहुत सी मिशन योजनाएं रोनाल्ड ऐलन के काम को भूल गयी हैं। बहुत से नियोग अपने आपको पैतृकवाद से दूर होने में कठिनाई महसूस करते हैं।

ग. स्पष्ट तौर पर बाइबल तथा पौलुस की नीति जाओ/दो/छोड़ो पर आधारित नई योजनाओं और नियोग सम्बन्धी शिक्षाओं की आवश्यकता है।

टिप्पणियाँ -

घ. विस्तार की दो संरचनाएं।

१. हम ने देखा है कि नियोग की संरचना ने किस प्रकार से नियोग को प्रभावित किया है। क्या ये संरचनाएं बाइबल आधारित हैं? क्या केवल स्थानीय कलीसियाओं को ही नियोग का ज़िम्मेदार होना चाहिए?

२. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त नियोग के अगुवे ,राल्फ विन्टर, विश्वास करते हैं कि सम्पूर्ण इतिहास में दो "छुटकारा देने वाली संरचनाएं" रहीं है। वह विश्वास करते हैं कि वर्तमान में हम इन दो संरचनाओं को स्थानीय कलीसिया और नियोग के समाज या अभिकरण के रूप में देख सकते हैं। दोनों को स्वीकार व इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

क. नये नियम के समय में छुटकारा देने वाली संरचना।

१) वहां नये नियम की कलीसिया थी।

२) उसके अलावा उनके बीच में प्रेरित पौलुस द्वारा तैयार किया गया मिश्नरियों का दल था।

क) उन्हें स्थानीय कलीसिया द्वारा बाहर भेजा गया था। लेकिन, वे स्वावलम्बी थे। उन्होंने स्वयं अपने खर्चे उठाए और बहुत सी कलीसियाओं ने उनकी सहायता की।

ख) वे पहली संरचना के सदस्य थे, लेकिन उन्होंने दूसरी संरचना से अतिरिक्त समर्पण किया। यह दूसरी संरचना पहली संरचना से अलग व भिन्न थी। यह केवल अन्ताकिया की कलीसिया का विस्तार नहीं था।

३) इन दोनों संरचनाओं में यहूदी जड़ें प्रतीत होती हैं।

क) स्थानीय कलीसिया आराधनालय से प्रभावित थी।

ख) मिश्नरी दल, यहूदी प्रचारक दलों के द्वारा प्रभावित थे (मत्ती २३:१५)।

ख. रोमी संस्कृति के अन्तर्रगत मसीही संरचना का प्रारम्भिक विकास।

१) नये नियम की कलीसिया रोमी संस्कृति के द्वारा प्रभावित होने लगी। उनकी स्वावलम्भितां में कमी आने लगी। डायसेस की अधीनता में कलीसियाओं का संगठन प्रारम्भ हो गया।

२) मिश्नरी दलों के सांस्कृतिक सहभागी भी थे। रोमी सैन्य संरचना से प्रेरित, "दूसरा निर्णय" संरचना एक मठ का रूप धारण करने लग गयी। ऐसे बहुत से मठों के आन्दोलन (इनमें ऐसे लोग शामिल थे जिन्होंने पहले समर्पण के अलावा अतिरिक्त समर्पण कर लिए थे) सुसमाचार प्रचार करने वाले थे।

टिप्पणियाँ -

ग. मध्यकालीन काल।

१) इस समय में, इन संरचनाओं के बीच में अन्तर सामने आने लगा। इसके साथ साथ इन दोनों संरचनाओं के बीच सहयोग अतिआवश्यक हो गया।

क) डायसेस कमज़ोर होने लगा। उसके पास विस्तार करने के लिए आवश्यक ढांचा नहीं था।

ख) मठ मज़बूत बने रहे। उसकी संरचना विस्तार के लिए बहुत लाभदायक थी। कई बार पहली संरचना ने सहायता के लिए दूसरी संरचना को बुलाया। डायसेस ने मठ से उसकी ओर से नियोग के काम करने के लिए कहा।

ग) मठ ने सहयोग किया। डायसेस को मठ की आवश्यकता थी। और मठ को डायसेस की आवश्यकता थी।

(१) यहां पर हम पुनः स्थापित आन्दोलन और प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ मिलकर कार्य करने की ऐतिहासिक वास्तविकता के बारे में बात कर रहे हैं।

(२) कलीसिया की संस्थागत संरचना को अपना जीवन देने के लिए कलीसिया की पुनःस्थापित संरचना की आवश्यकता है (जो अतिरिक्त समर्पण पर आधारित है)।

(३) पुनः स्थापित संरचना को अपने फल को व्यवस्थित करने के लिए संस्थागत संरचना की आवश्यकता है।

२) इसे फ्रांसिसकेन आन्दोलन और उसके बाद में मैथोडिस्ट जागृति के द्वारा समझाया गया है।

घ. दूसरी संरचना को प्रोटैस्टेन्ट अर्थात विरोधी प्रारूप।

१) कुछ अपवादों को छोड़कर (पाइटिस्ट आन्दोलन और वेसलियन आन्दोलन), प्रोटैस्टेन्ट आन्दोलन ने पुनःस्थापित संरचना को छोड़ने का प्रयास किया (जिन्हें वर्तमान में हम "पैराचर्च" सेवकाईयां कहते हैं)। रुचि की बात यह है कि उन्होंने भी नियोग को त्याग दिया।

२) अन्त में, दूसरा (पुनःस्थापित) संरचना का निर्माण हुआ। इसे मिशन सोसाइटी का नाम दिया गया।

टिप्पणियाँ -

ङ. कलीसिया की दूसरी संरचना को लेकर समकालीन भ्रान्ति।

१) प्रोटैस्टेन्ट आन्दोलन को दूसरी संरचना की वैद्यता को लेकर सदैव संदेह रहा है। स्थानीय कलीसिया पर उसके सकेन्द्र ने उसे दूसरी संरचना के वैद्यता का इनकार करने के लिए प्रेरित किया है।

क) इसलिए, मूल रूप से स्वावलम्बी नियोग अभिकरणों पर (अर्थात दूसरी संरचनाओं) प्रायः केन्द्रिय कलीसीयाओं ने कब्ज़ा कर लिया है (यहां पर यह समझना जरूरी है कि "दूसरी संरचना" अभिकरणों को स्थानीय कलीसिया के अधिकारों को नहीं छीनना चाहिए... उन्हें एक वैद्य संरचना का प्रतिनिधित्व करने के लिए, उन्हें सेवा करना और स्थानीय कलीसिया की ओर इंगित करना चाहिए)।

ख) इसके अलावा, साम्प्रदायिक नियोग अभिकरण कलीसिया का रोपण करती है लेकिन कोई नियोग अभिकरण का रोपण नहीं करती। हालांकि, जब एक कलीसिया का र्निमाण किया जाए तब उसमें एक संरचना अर्थात एक ढांचे का निर्माण भी निहित होना चाहिए, जो कलीसिया की सीमा से परे जा सके।

ग) "प्रेरितों की कलीसिया रोपण के दल" को एक ऐसी कलीसिया की स्थापना करनी चाहिए जो उस कलीसिया के जैसे अन्य दो कलीसियाओं को खड़ा करे। एक दल के सदस्य वहीं रूक कर उस प्रथम कलीसिया की संरचना के अगुवे बनेंगे। दूसरा दल वही काम करेगा जो काम मूल दल ने किया था और वह कलीसिया की दूसरी संरचना बन जाएगी (जिसे स्थानीय कलीसिया की ओर से अन्य स्थानीय कलीसियाओं को प्रारम्भ करने के लिए, परमेश्वर की अधीनता में अधिकार रखने, और साथ ही साथ भेजने वाले स्थानीय कलीसिया के अधिकारियों और स्थापित किये जाने वाले नये स्थानीय कलीसिया के अधिकारियों दोनों का आदर करने के लिए भेजा गया है)।

वैश्विक नियोग II

टिप्पणियाँ -

II. शेष कार्य।

क. राष्ट्रों तथा मिश्रित-संस्कृतियों में सुसमाचार प्रचार।

१. राष्ट्र और देश।

क. क्या एक बाइबल आधारित "राष्ट्र" एक "देश" है (अर्थात एक राजनैतिक सत्ता जिसकी अपनी भौगोलिक सीमाएं हों)?

१) वास्तव में नहीं! "राष्ट्र" के लिए ग्रीक शब्द "ethnos" अर्थात "एथनोस" है, अर्थात एक जातीय इकाई या लोगों का समूह।

लेखक की टिप्पणी:

उदाहरण के लिए, अमेरिका में एक "चेरोकी राष्ट्र" है जो भारतियों की एक विशेष जनजाति को दर्शाता है।

अपना उदाहरण लिखें:

क) यही विचार हमें पुराने नियम में भी मिल जाता है। उत्प. १२:३ में, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे। और इब्रानी भाषा में "कुल" लोगों के समूहों को दर्शाते हैं।

ख) प्रकाशितवाक्य ५:९ और १०:११ में यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। इस शब्द का इस्तेमाल "लोगों, जातियों, भाषाओं और रिश्तेदारों" के लिए इस्तेमाल किया गया है।

२) फिर भी बहुत से मसीही लोग जब भी मत्ती २८:१९ को पढ़ते हैं तो वे उसे देश ही समझते हैं।

३) फिर भी भारत जैसे कई देश हैं जिनमें ३००० अलग अलग बाइबल आधारित **राष्ट्र** निहित हैं।

टिप्पणियाँ -

ख. निश्चय ही, एक समूह के लोगों का नज़रिया (देश के लोगों के नज़रिये के विपरीत) हम नियोग की रणनीति को बदलेगा।

१) यह हमारी रणनीति या योजना के कामों को प्रभावित करेगा।

२) यह हमारी रणनीति के स्वभाव को प्रभावित करेगा।

३) "लोगों" की रणनीति एक ऐसे स्वभाव की रचना करती है जो लोगों को उनकी संस्कृति के दायरे में ही देखता है। यह संस्कृति के प्रति संवेदनशील होती है।

लेखक की टिप्पणी:

लोगों का एक समूह, लोगों का एक सामाजिक समूह होता है। यह राजनैतिक लोगों का समूह नहीं होता। लोग राजनैतिक सीमाओं से जुड़े हुए नहीं होते हैं। वे सामाजिक तत्वों के कारण जुड़े होते हैं (भाषा, संस्कृति और धर्म इत्यादि से)।

२. विशाल क्षेत्र, विस्तृत क्षेत्र और सूक्ष्म क्षेत्र।

क. विशाल क्षेत्र, विशाल संस्कृति के लोगों के समूह हैं। उदारहण के लिए, मुसलमान।

ख. विशाल क्षेत्र के अन्तर्गत छोटी छोटी इकाईयां होती हैं जिन्हें विस्तृत क्षेत्र कहा जाता है। उदाहरण के लिए, सुन्नी मुसलमान और सूफी मुसलमान होते हैं। ये दो समूह मुसलमानों के विशाल क्षेत्र के विस्तृत क्षेत्र होते हैं।

ग. एक विस्तृत क्षेत्र के बहुत से सूक्ष्म क्षेत्र हो सकते हैं। सुन्नी मुसलमानों के बीच में बहुत से अरबी बोलने वाले और अफ्रिकी भाषा बोलने वाले सुन्नी हैं।

३. E (ई)-१, E (ई)-२, और E (ई)-३ सुसमाचार प्रचार।[४] ("E (ई)" सुसमाचार प्रचार को दर्शाता है, "१-२-३" दूरी/बाधाओं तथा सुसमाचार के अत्यधिक प्रयासों को दर्शाता है।)

क. प्रचार कार्य एक स्थानीय कलीसिया द्वारा किया जाने वाले सुसमाचार प्रचार है। इसके अन्तर्गत उन लोगों को सुसमाचार सुनाया जाता है जो आपके आस पास रहते और कार्य करते हैं। इस अभिप्राय अपने ही लोगों को सुसमाचार सुनाना है।

ख. E (ई)-२ और E (ई)-३ सुसमाचार प्रचार में कुछ सांस्कृतिक बाधाओं को पार करना चाहिए।

१) E(ई)-२ के अन्तर्गत सुसमाचार सुनाने की जरूरत तब पड़ती है जब एक <u>भाषा की बाधा</u> को पार किये जाने की जरूरत पड़ती है। उदाहरण के तौर पर, जब कोई कैन्टोनेसे बोलने वाला कोई जन किसी कैन्टोनेसे भाषा बोलने वाले समूह में जाता है जो अन्य किसी भाषा को बोलते हैं।

२) E(ई)-३ सुसमाचार प्रचार तब सामने आता है जब <u>कुछ बाधाओं</u> को पार करने की ज़रूरत पड़ती है (भाषा, संस्कृति, माहौल, दूरी, इत्यादि)।

वैश्विक नियोग II

टिप्पणियाँ -

४. इवैन्जलीज़म या सुसमाचार प्रचार और नियोग।

क. सुसमाचार प्रचार वह कार्य है जिसके द्वारा सूक्ष्म क्षेत्र से लोगों को उस कलीसिया में लाया जाता है जो पहले से ही विद्यमान है।

ख. नियोग वह कार्य है जिसके द्वारा सुसमाचार उन क्षेत्रों में लाया जाता है जिनमें ऐसी कोई कलीसिया नहीं है जो अपने सूक्ष्म क्षेत्र में पाये जाने वाले लोगों को सुसमाचार सुना सके।

१) अधिकतर "नियोग" वर्तमान में वास्तव में सुसमाचार प्रचार कर रहे हैं। इसलिए, राल्फ विन्टर इसे "नियमित नियोग" के नाम से पुकारने पर मज़बूर है और वह "सीमांत नियोग" शब्द को उस नियोग के लिए आरक्षित करते हैं जो एक बाइबल आधारित नियोग है।

लेखक की टिप्पणी:

लेखक "प्रत्यक्ष नियोग" शब्द का इस्तेमाल उस दशा में करना चाहते हैं जब वह सुसमाचार को ऐसी संस्कृति में सुनाने की बात कर रहे हो जहां पर अभी तक ऐसी कलीसिया न हो जो स्वयं अपने लोगों को सुसमाचार सुना सके।

"अप्रत्यक्ष नियोग" शब्द एक ऐसी संस्कृति में सुसमाचार सुनाने को दिखाता है जहां पर पहले से ही एक स्वदेशी व स्थानीय कलीसिया विद्यमान है, लेकिन वह सफल तरीके से लोगों को सुसमाचार नहीं सुना पा रही है। मुख्य अन्तर यह है कि प्रत्यक्ष नियोग का अर्थ है कि वहां पर अभी तक कोई कलीसिया स्थापित नहीं हुई है।

२) इस चर्चा में सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि बाइबल आधारित नियोग पर दिया जाने वाला बल भौगोलिक नहीं, वरन सेवा पर है।

क) कोई मसीही सुसमाचार प्रचार करने के लिए किसी दूसरे देश में जाता है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वह एक मिश्नरी है। हमसे नियोग को भौगोलिक मानक के आधार पर परिभाषित करने की प्रायः गलती होती रही है।

ख) वह मसीही जन अन्य देश में क्या सेवकाई कर रहा है? इसी से यह निर्धारित होगा कि वह एक मिशनरी है या नहीं। हमें नियोगों को "नियोग" के आधार पर परिभाषित करना होगा। "नियोग" क्या है? यदि आपका नियोग या लक्ष्य किसी दूसरे देश में जाना है, तब एक पर्यटक के अलावा और कुछ नहीं हैं। यदि आपको लक्ष्य दूसरे देशों में जाकर सेवा निभाना है, तब आप एक प्रत्यारोपित पासबान से बढ़कर कुछ और नहीं हैं। लेकिन यदि आपका लक्ष्य मत्ती २४:१४ की मांग को पूरा करता है (अर्थात ऐसे स्थानों में सुसमाचार सुनाना जहां पहले कभी सुसमाचार नहीं सुनाया गया हो) तब आप एक मिश्नरी हैं।

टिप्पणियाँ -

५. सांस्कृति बाधाएं।

क. भाषा की रूकावटें।

१) सुसमाचार प्रचार करने में सबसे अधिक और बड़ी बाधा भाषा की होती है।

२) संसार भर में आज बोली जाने वाली ७,००० भाषाएं और उपभाषाएं हैं।

ख. सामाजिक बाधाएं।

१) जिस प्रकार से भाषा लोगों को अलग करती है, उसी प्रकार से सामाजिक भेद लोगों को अलग करते हैं।

२) जातीय, व्यवसायिक, शैक्षिक, आर्थिक और धार्मिक अन्तर कुछ ऐसी सामाजिक बाधाएं हैं जिन पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है।

ग. प्रतिस्पर्द्धाएं और पूर्णधारणाएं- एक समूह द्वारा दूसरे समूह से भेदभाव करना सुसमाचार को फैलने से रोक सकता है।

६. सास्ंकृतिक बाधाओं को पार करना।

क. प्रेरितों १:८ भौगोलिक स्थिति से आगे भी सुसमाचार की प्रगति को दिखाता है। यह धीरे धीरे सांस्कृतिक परिवर्तन को भी दर्शाता है।

१) यहूदियों के लिए सामरियों को सुसमाचार सुनाना आसान काम नहीं था।

२) उनमें बहुत सी सांस्कृतिक बाधाएं थी, उनमें से एक भी आपसी घृणा से कम नहीं थी।

ख. जिस जगह पर पूर्णधारणा विद्यमान हो उस जगह पर ऐसे प्रचारक को भेजना अच्छा है जिसे आने वाले समय में सांस्कृतिक रूप से चिन्हित समूह से हटा दिया जाए।

लेखक की टिप्पणी:

उत्तरी अमेरिका की भाषा में कहें तो, "मैक्कोय" का "हैटफील्ड" को सुसमाचार करना, "जॉनसन" द्वारा "हैटफील्ड" को सुसमाचार सुनाने से उत्तम होगा। (ये नाम दो कुलों को दर्शाते हैं जो उत्तरी अमेरिका के इतिहास में वर्षों से एक दूसरे के बैरी हैं)।

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

ग. जहां पर कोई पूर्वधारणा नहीं होती है वहां पर उस व्यक्ति के लिए सुसमाचार प्रचार करना अधिक प्रभावशाली रहता है जो सांस्कृतिक तौर पर उस समूह के अधिक निकट हो।

लेखक की टिप्पणी:

गौटेमालान की भाषा में, लाडीनों के लिए चोरती भारतीयों को प्रचार करना, एक रूसी व्यक्ति द्वारा उसी व्यक्ति को प्रचार किये जाने की तुलना में आसान है।

रूसी व्यक्ति प्रचार करते समय दो भाषाओं की बाधाओं (अर्थात स्पैनिश और चोरती भाषा) को पार करते हुए E (ई)-३ का इस्तेमाल करेगा।

लेकिन लाडीनों सुसमाचार प्रचार करते समय E-२ का इस्तेमाल करेगा क्योंकि उसे केवल एक ही भाषा (चोरती) की बाधा को पार करना होगा।

अपना उदाहरण लिखें:

घ. प्राथमिकता।

१) मिशन का अध्ययन करने वाले अनुमान लगाते हैं कि इन शिक्षाओं को लिखे जाने के समस तक (१९९४) ११००० ऐसे समूह है जहां पर सुसमाचार नहीं पहुंचा है।

२) "सीमांत" या "प्रत्यक्ष" नियोग आपकी कलीसिया की प्राथमिकता होनी चाहिए।

टिप्पणियाँ -

ख. सुसमाचार से वंचित लोगः बौद्धों और चीनियों का विशाल क्षेत्र।

१. सारे संसार में ऐसे "छुपे हुए" लोगों के समूह हैं जिन तक अभी परमेश्वर का वचन नहीं पहुंचा है। इसके अलावा ऐसे "जातियां" हैं जिन्होंने कभी सुसमाचार को नहीं सुना है।

२. बौद्ध एक विशाल क्षेत्र।

क. इस धर्म का उदय ईसा पूर्व ६ शताब्दी में बुद्ध के द्वारा किया गया था। आज इस धर्म को मानने वाले लगभग २३५ मिलियन लोग है जो अधिकतर पूरब के रहने वाले हैं।

ख. बौद्ध धर्म की जड़ें जाकर हिन्दू धर्म में जुड़ी हुई हैं। यह मनुष्य द्वारा किया जाने वाला एक दार्शनिक प्रयास है जिसके द्वारा वह अपने आप को सिद्ध बना सकता और अपने आप को बचा सकता है।

१) परेशानियों से बचने के लिए मनुष्य को अपनी स्वार्थी इच्छाओं को नाश करना चाहिए।

२) यह कार्य आत्म-इनकार और नई शिक्षा को धारण करने से होता है। प्रत्येक नया जीवन लक्ष्य तक पहुंचने की अन्य संभावना को दिखाता है। इसका लक्ष्य "निर्वान" की स्थिति से कम नहीं है।

३) ऐतिहासिक तौर पर देखें तो, संसार भर में बौद्ध धर्म बाहुल्य क्षेत्रों में मसीहीयत प्रगति नहीं कर पायी है। लेकिन, हालिया लड़ाईयों और प्राकृतिक आपदाओं ने सुसमाचार प्रचार करने के लिए किसी भी समय से अधिक अवसर प्रदान किये हैं।

३. चीनियों का विशाल क्षेत्र।

क. दुनिया भर में रहने वाले १.२ बिलीयन चीनियों में से अधिकतर अभी चीज में रहते हैं।

ख. १९४९ में, साम्यवादियों द्वारा अधिकार करने के बाद १०,००० मिश्नरियों को वहां से निष्कासित कर दिया गया। उसके बाद भी अलगे तीस वर्षों तक उन पर सताव होता रहा। लेकिन सताव के इन वर्षों के दौरान भी कलीसिया बढ़ती रही।

१) कलीसियाओं के बीच में पारस्परिक सकारात्मक संबंध और सताव को लेकर अचम्भित नहीं होना चाहिए।

२) यह संबंध उस दिनों से है जब से प्रारम्भिक कलीसियाओं का विरोध हुआ और उसे कलीसिया के इतिहास में देखा जा सकता है।

टिप्पणियाँ -

ग. चीन में रहने वाले चीनी लोगों तक पहुंचना एक मुश्किल लक्ष्य है।

१) यह एक समाजवादी देश है। इसका अर्थ है कि लोगों के मनों को मार्क्सवादी नास्तिकता से भर दिया गया था।

२) चीन बहुत से बदलावों पर निर्भर करता है। इस देश के लिए कोई भी छोटी योजना बनाना मुश्किल है क्योंकि यहां पर बहुत जल्दी ही परिस्थितियां बदल जाती हैं। थोड़ी बहुत आज़ादी जो आज मसीहियों को वहां पर मिली है उसे एक ही रात में छीना जा सकता है। वहां पर कोई स्थिरता का बोध नहीं है।

३) लेकिन, चीन में बहुत से मसीही हैं। रिपोर्ट बताती है कि यहां पर १० मिलियन से लेकर १०० मिलियन मसीही है (वर्तमान अनुमान कहता है कि यहां ७० मिलियन मसीही है)। चीन के लिए रणनीति बनाते समय हमें चीन में विद्यमान कलीसियाओ के साथ मिलकर कार्य करना तथा उनकी अपने लोगों तक पहुंचने में सहायता करने को विचार करना चाहिए।

ग. हिन्दू, मुस्लिम, और आदिवासियों का विशाल क्षेत्र।

१. हिन्दुओं का विशाल क्षेत्र।

क. भारत के इस के ८५० मिलियन लोगों में से अधिकतर लोग (लगभग ६०० मिलियन लोग) ४,००० वर्ष पुराने हिन्दु धर्म में पाए जाते हैं।

ख. इस धर्म को जातियों के आधार पर व्यवस्थित किया गया है जिसमें ३,००० विभिन्न समूह के लोग पाए जाते हैं। हिन्दू धर्म के बहुत से प्रारूप हैं।

१) धार्मिक हिन्दू।

क) इस धर्म के अनुयायी अनेकों देवताओं के अवतारों में विश्वास करते हैं। वे ३३ करोड़ देवी देवताओं में से किसी को भी और कितनों को भी मान सकते हैं।

ख) उद्धार ज्ञान, भक्ति और भले कामों से मिलता है।

२) प्रसिद्ध हिन्दुवाद- ठीक आदिवासी हिन्दुवाद के समान यह हिन्दू विश्वास और जीववाद का मिश्रण है।

३) हिन्दुवाद के और भी प्रारूप हैं। हिन्दु धर्म बहुत से मतों और अभ्यासों का मिश्रण है और इसे एक धर्म के रूप में परिभाषित करना अति कठिन कार्य है।

टिप्पणियाँ -

ग. हिन्दुओं के बीच में प्रचार करना अति कठिन कार्य है। निम्नलिखित सूची में हिन्दुओं के बीच में प्रचार करने के बहुत से तरीकों के बारे सुझाव दिया गया हैः

१) निचली जातियों पर ध्यान केन्द्रित करना। वे सुसमाचार सुनने के लिए अधिक खुले हैं। (लेकिन, इस बात को ध्यान में रखें कि हर एक जाति को सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है)।

२) जाति को ध्यान में रखते हुए प्रचार करें। सुसमाचार प्रचार करें, चेला बनाएं, और पहले से विद्यमान सामाजिक संरचना में कलीसियाओं की स्थापना करें।

३) प्रासंगिकता पर ध्यान दें। भारतियों पर पाश्चात्य शैली और धर्मशास्त्र को थोपने का प्रयास न करें।

२. मुसलमानों का विशाल क्षेत्र।

क. इस्लाम के ९०० मिलियन अनुयायी पूरे उत्तरी अफ्रिका से लेकर पूर्वी क्षेत्र में इंडोनेशिया द्वीप तक फैले हुए हैं।

ख. ७वीं सदी में इस्लाम का उदय मुहम्मद साहब के द्वारा हुआ। उसके तुरन्त बाद ही "जिहाद" या "पवित्र लड़ाई" के द्वारा यह धर्म तुरन्त फैलने लगा। मुसलमानों ने बहुत से देशों पर चढ़ाई करके उन्हें जीत लिया और बाद में उन्होंने उस देश के लोगों बलपूर्वक धर्म परिवर्तन करवाया।

ग. ११वीं शताब्दी में, "धार्मिक सभाएं" होना प्रारम्भ हुईं। यह यूरोप में रहने वाले मसीहियों द्वारा किया जाने वाला प्रयास था जिसमें उन्होंने उन देशों को वापस पाने का प्रयास किया जिसे कई वर्षों पहले मुसलमानों ने जीत लिया था। दुर्भाग्य वश, इस क्रूसेड्स के कारण जो कड़वाहट मुसलमानों के मन में उत्पन्न हुई थी वह आज भी वैसी ही बनी है। इसी लिए उन्हें सुसमाचार सुना पाना बहुत ही कठिन काम होता है।

घ. इस एक सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर पर विश्वास करने वाला धर्म है। वे बाइबल को अपनी पवित्र पुस्तकों में से एक और यीशु को एक पैगम्बर मानते हैं। लेकिन उनके लिए, कुरान, बाइबल की तुलना में और मुहम्मद यीशु की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं।

ङ. पिछले दिनों में मुस्लिम संसार में काफी लड़ाई रही है। झगड़ों की वजह से प्रायः परिवर्तन के द्वार खुल जाते हैं। सम्भवतः यह समय मुसलमानों तक पहुंचने का समय है।

च. इसे सदैव याद रखना चाहिए कि इस्लाम में बहुत से विस्तृत क्षेत्र होते हैं।

१) मुसलमान, धार्मिक, रहस्यमय, और धर्मनिरपेक्ष मुसलमान होते हैं।

२) मुसलमान, एशिया में रहने वाले, अफ्रिकी, अरबी देशों में रहने वाले होते हैं।

३) इस्लाम के बहुत से प्रारूप होते हैं (शिया और सुन्नी)।

टिप्पणियाँ -

३. आदिवासी क्षेत्र।

क. जनजातीय लोग वे लोग हैं जिन्होंने संसार के किसी भी बड़े धर्म का अनुसरण नहीं किया और जो जीववाद का अभ्यास करता है (वे आत्माओं को आराधना करते और पेड़ों ओर पत्थरों को मानते हैं।

ख. सम्पूर्ण संसार में लगभग ६,००० आदिवासी रहते हैं।

ग. कई बार आदिवासी लोग बहुत ध्यान से सुसमाचार सुनते हैं।

घ. नीचे आदिवासी लोगों में सुसमाचार प्रचार करने के सुझावों की सूची दी गयी है।

१) विशेष तौर पर आदिवासियों के साथ में भूतकाल में कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। इससे समन्वयता को नज़रअन्दाज़ करने में सहायता मिलेगी (अर्थात मसीहियत का उनके पिछले धर्म के साथ मिलाना)।

२) व्यक्ति विशेष पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय जन आन्दोलन पर ध्यान केन्द्रित करें। लोगों के समूह को सुसमाचार सुनाएं। आदिवासी लोग अधिकतर अपने निर्णय समूह में लेते हैं।

३) सुसमाचार को प्रासंगिक बनाएं। जितना संभव हो सांस्कृतिक कला के प्रारूपों का इस्तेमाल करें।

४) समाज के मज़बूत बोध का इस्तेमाल करें कि एक आदिवासी को कलीसियाओं में मज़बूत संगति को बढ़ावा देना है।

नियोग में बड़ा असन्तुलन

वर्तमान नियोग की शक्ति का केवल ९: भाग ही संसार भर में सुससमाचार से वंचित लोगों तक सुसमाचार पहुंचाने के लिए किया जा रहा है। लेकिन, कुछ नियोग विशेषज्ञ कहते हैं कि संसार के ७५: लोगों ने सुसमाचार सुना ही नहीं है।

यदि यह आंकड़े ठीक हैं, तो हम अपनी ९१: नियोग की ताकत को संसार के २५: लोगों में खर्च कर रहे हैं (जिन्होंने पहले की सुसमाचार सुन रखा है)। हम अपनी नियोग की ताकत का केवल ९: भाग ही सुसामाचार से वंचित ७५: लोगों (अर्थात जिनके पास अभी तक वचन नहीं पहुंचा) तक पहुंचने में कर रहे हैं।

टिप्पणियाँ -

घ. बचे हुए काम का निष्कर्ष।

१. पूर्वी देशों के रहस्यमय धर्म।

क. बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म और कुछ चीनी धर्म बिल्कुल मसीहियत के सदृश्य नज़र आते हैं। वे सभी स्व के मरने, त्याग करने और अपने आपे का इनकार करने की बात करते हैं। वे अपने सिद्धान्तों में इतने समर्पित होते हैं कि किसी ने इस प्रकार से कहा, कि "गांधी जी मसीही न होते हुए भी कई मसीहियों से बेहतर मसीही थे।"

ख. हमें सदैव यह याद रखना चाहिए कि सम्भावित और वास्तविक महानता में अन्तर होता है। वास्तविक महानता होने के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि आपके भीतर वह रहा हो जो एकमात्र महान है, अर्थात यीशु मसीह। इसे संभव करने के लिए आपको अपने आप के लिए मरना होगा। लेकिन अगर यीशु का अवसर नहीं दिया जा रहा है तो केवल महानता की केवल सम्भावना है।

चर्चा विषय

१ तीमुथीयुस ४:७, ८ पर ध्यान दें। पूर्वी देशों के रहस्यमय धर्मों की वास्तविकता को समझने और उन पर चर्चा करने के लिए निम्नलिखित आरेख का इस्तेमाल करें।

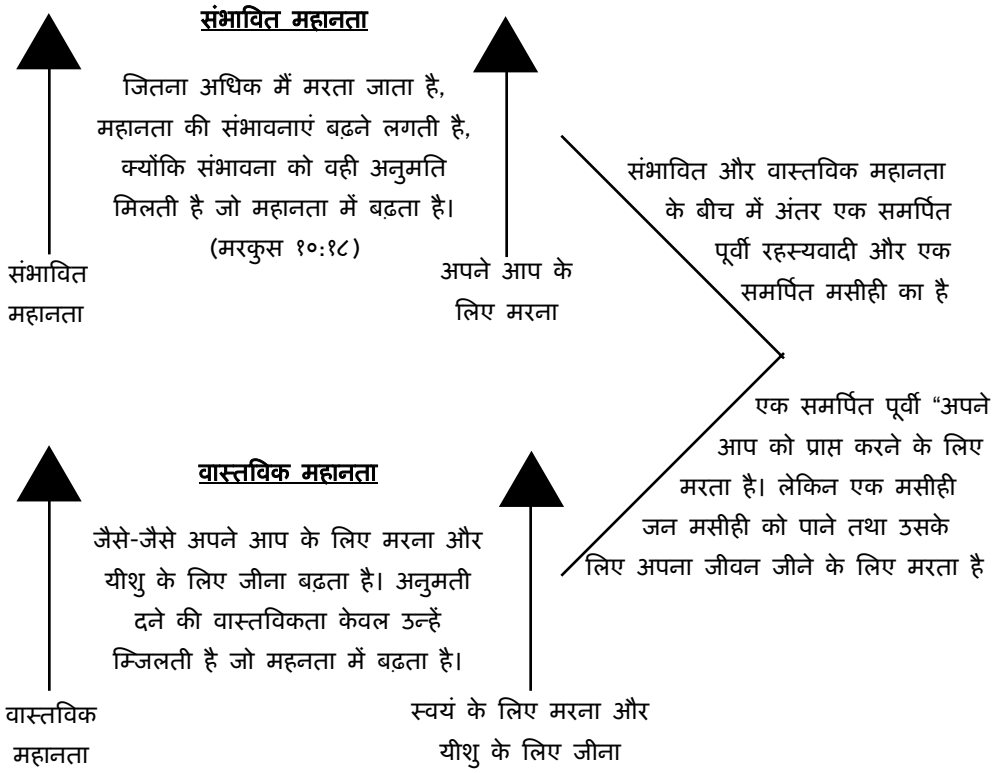

टिप्पणियाँ -

२. संसार के सारे धर्म।

क. अन्त में, केवल दो ही धर्म विद्यमान होते हैं।

१) वह धर्म जो उद्धार के लिए परमेश्वर पर भरोसा करता है (मसीहीयत)।

२) वह धर्म जो उद्धार के लिए मनुष्यों पर भरोसा करते हैं (दुनिया के बाकि धर्म)।

ख. मसीहियत ही एकमात्र ऐसा धर्म है जो उद्धार पाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करता है। अन्य सभी धर्मों में एक बात सामान्य है। वे उद्धार या मोक्ष प्राप्ति के लिए मनुष्य पर भरोसा करते हैं।

१) विश्वास के द्वारा उद्धार पाने और कामों के द्वारा उद्धार पाने में यही अन्तर है।

२) संसार भर में अनेकों धर्म होने का कारण यह है कि संसार में उद्धार के निमित्त कार्य करने के लिए बहुत से तरीके हो गये हैं।

ग. इस सामान्य समझ के साथ, हम संसार भर के लोगों तक सुसमाचार पहुंचाने के लिए कैसे एक सामान्य **रणनीति** तैयार कर सकते हैं?

१) मसीहियत तथा अन्य धर्मों के बीच में बुनियादी अन्तर यह है कि मसीहियत इस बात का दावा करती है कि उद्धार परमेश्वर द्वारा किये गये कार्यों पर विश्वास करने के द्वारा मिलता है। परमेश्वर ने मनुष्यों को देने के लिए पहले से ही उद्धार तैयार कर दिया है। मनुष्य को उद्धार के लिए कार्य करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि वह कुछ कर नहीं सकता है। परमेश्वर ने सारा काम कर दिया है।

२) इसका अर्थ है कि मसीहियत के पास सारे लोगों को देने के लिए दो मुख्य घटक हैं।

क) पापों की क्षमा (क्योंकि परमेश्वर ने क्षमा प्रदान की है)।

ख) परमेश्वर के साथ संबंध (क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही मनुष्य का अपने साथ मेल कराने के लिए रास्ता तैयार कर दिया है)।

टिप्पणियाँ -

३) संसार के अन्य सभी धर्म ये दो घटकों को देने का प्रस्ताव नहीं रख सकते क्योंकि क्योंकि वे किसी न किसी तरीके से "कामों के द्वारा उद्धार" पाने की वकालत करते हैं।

क) झूठे धर्मों के अनुयायियों को यह देखने के लिए **इन्तज़ार** करना पड़ता है कि क्या उन्होंने क्षमा प्राप्त करने के लिए पर्याप्त मात्रा में काम किये हैं। वे अभी क्षमा को जान ही नहीं सकते हैं क्योंकि क्षमा उन पर निर्भर करती है और उन्हें इस बात का भरोसा नहीं है कि उन्होंने क्षमा प्राप्त करने के लिए पर्याप्त मात्रा में काम किये हैं।

ख) उन्हें परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को बनाने के लिए **इन्तज़ार** करना पड़ेगा क्योंकि वह रिश्ता प्राप्त क्षमा को ही परिणाम होता है।

४) हमारी रणनीति इस समझ पर आधारित होनी चाहिए। प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करने तथा उससे अपना रिश्ता बनाने की चाह रखता है। सच्चाई यह है कि संसार के धर्म उन्हें यह प्राप्त करने का रास्ता नहीं बताते। लेकिन मसीहियत बताती है। यहीं पर सुसमाचार प्रचार प्रारम्भ और समाप्त होता है।

क) उदारहण के लिए एक मुसलमान, आप सुबह से रात तक बहस कर सकता है, लेकिन आप जैसे ही उससे यह प्रश्न करेगें, कि "क्या उसे क्षमा मिल गयी है?" वह चुप हो जाएगा। वह इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता है। एक मसीह जन ने सुसमाचार के द्वारा उसे क्षमा की पेशकश करनी चाहिए।

ख) यही बात परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाने की संभावना के क्षेत्र में भी सत्य है। प्रियों, मुसलमानों के बारे में यह बात प्रचलित है कि उन्हें परमेश्वर से बातचीत करने के लिए तीन दिन तक मेज़ पर सिर पटकना पड़ता है। उनका धर्म उन्हें परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाने का कोई रास्ता नहीं प्रदान करता। वे उस रास्ते को पाने के लिए बेताब हैं।

वैश्विक नियोग II

टिप्पणियाँ -

III. सुसमाचार से वंचित लोगों तक पहुँचना।

क. नियोग की चार रणनीतियाँ।

१. सही लक्ष्य (मत्ती २८:१९-२० देखें)।

क. यहाँ हम चार शब्दों को देखते हैं जो कार्य (क्रिया) को दर्शाते हैं:

१) जाकर (शाब्दिक रूप से, "जाओ")।

२) चेले बनाओ।

३) बपतिस्मा दो (शाब्दिक रूप से, "बपतिस्मा देना")।

४) सिखाओ (शाब्दिक रूप से, "शिक्षा")।

ख. क्रियाओं में से केवल एक ही आज्ञा के रूप में है (चेले बनाओ)।

ग. अन्य तीन शब्द कृदंत (participles या प्रटिसिपल्स) या सहायक क्रियाएं हैं।

घ. इस प्रकार, नियोग का सही लक्ष्य चेला बनाना है। अन्य क्रियाएं लक्ष्य नहीं हैं। वे ऐसे तरीके हैं जिनका उपयोग लक्ष्य को पूरा करने के लिए किया जा सकता है (मरकुस १६:१५, १६; लूका २४:४७,४८; यूहन्ना २०:२१; प्रेरितों के काम १:८ देखें)। ये अनुच्छेद उन विधियों को दोहराते और जोड़ते हैं जिनका उपयोग चेला बनाने के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए किया जा सकता है।

ङ. महान आज्ञा को पूरा करने की रणनीति में तरीकों और लक्ष्यों के बीच के अंतर पर विचार करना चाहिए। प्रचार करना लक्ष्य नहीं हो सकता। यह लक्ष्य तक पहुँचने का एक तरीका है। लक्ष्य चेले बनाना है। जाना लक्ष्य नहीं हो सकता। यह सिर्फ एक तरीका है।

१) दुर्भाग्य से, कई सेवक लक्ष्य के विषय में चिंतित नहीं हैं। वे तरीकों के विषय में अधिक चिंतित हैं। कुछ बस दूसरे देश में जाने से संतुष्ट हैं। उन्हें लगता है कि यह नियोग है।

२) हमें यह याद रखना चाहिए कि नियोगों के भी "नियोग" होते हैं। यदि आप नियोग को परिभाषित नहीं कर तो आप शायद एक सेवक नहीं हैं। मत्ती २८ के अनुसार, नियोग भौगोलिक दृष्टि से उन्मुख होने की तुलना में क्रिया उन्मुख है।

टिप्पणियाँ -

च. इसका अर्थ है कि मसीह की देह के अन्य भागों के साथ सहयोग। एक व्यक्ति लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सब कुछ नहीं कर सकता। कुछ उपदेश देते हैं, कुछ सिखाते हैं, कुछ व्यवस्था करते हैं, कुछ पासबान होकर अगुवाई करते हैं आदि। एक सेवक के नियोग को स्पष्ट रूप से चेला बनाने के लक्ष्य की ओर दूसरों के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

छ. चेला बनाने का क्या अर्थ है?

१) इसका अर्थ लोगों को प्रार्थना करने के लिए कहना नहीं है। इसका अर्थ है लोगों को नई सृष्टि बनते देखना (वे जो यीशु का अनुसरण करेंगे)।

क) याद रखें कि चेले तीन वर्ष तक यीशु के साथ चलते रहे। परन्तु जब वे उसका अनुसरण करने लगे, तो वे तुरंत चेले कहलाए (मरकुस २:१४-१६ देखें)।

ख) आप कैसे जान सकते हैं कि कोई चेला है या नहीं? परिवर्तित प्राथमिकताओं के साथ एक परिवर्तित जीवन होता है (प्रेरितों के काम २:४१,४२ और यूहन्ना १३:३५ देखें)।

२) इसका अर्थ "शिष्यत्व" नहीं है। यह महान आज्ञा के लक्ष्य से परे है।

क) ध्यान दें कि मत्ती २८ में चेला बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों में से एक (नई सृष्टि/यीशु के अनुयायी) शिक्षण है। यह भी ध्यान दें कि यीशु ने "अनुसरण" करना या उसकी आज्ञाओं का पालन करना सिखाया। यीशु की सभी आज्ञाओं को सिखाया नहीं जाता है। यह महान आज्ञा के लक्ष्य से परे है। यह महान आज्ञा का लक्ष्य पूरा होने के बाद किया जाता है।

ख) पौलुस के नमूने का उपयोग करते हुए, हम देख सकते हैं कि यह स्थानीय कलीसिया को चेले बनाने देने के प्राकृतिक तरीके से किया गया था। सेवक ने केवल यह सिखाया कि चेला बनने के लिए (याद रखें: सेवक का लक्ष्य चेला बनाना है) आपको यीशु की आज्ञाओं का पालन करने के लिए तैयार रहना होगा।

चर्चा विषय

नियोग की रणनीति के निहितार्थ पर विचार करें और चर्चा करें। क्या सेवक अपनी यात्रा को टाल रहे हैं? जब वे साल-दर-साल एक ही स्थान पर रहते हैं, तो क्या वे महान आज्ञा के लक्ष्य से आगे बढ़ रहे हैं या नहीं?

टिप्पणियाँ -

२. सही समय पर सही जगह।

क. एक किसान "खेत के दर्शन" को समझ सकता है।

ख. उसका लक्ष्य बीज बोना नहीं है। यह उसके लक्ष्य तक पहुँचने का केवल एक तरीका है। उसका लक्ष्य खेत पैदा करना है।

१) बोने में दर्शन (लूका ८:४-१५ देखें)।

क) बोने वाले का दृष्टान्त एक उदाहरण है।

(१) एक किसान ने चार अलग-अलग प्रकार की मिट्टी में बीज बोया। केवल एक मिट्टी ही खेत दे पायी।

(२) अंतर बीज या बोने वाले में नहीं था। यह अंतर मिट्टी में था।

ख) नियोगों में भी ऐसा ही होता है।

(१) कुछ लोग दूसरों की तुलना में सुसमाचार के प्रति अधिक ग्रहणशील होते हैं। यदि सेवक "खेत के दर्शन" को बनाए रखता है तो वे प्राथमिकता में होंगे।

(२) लक्ष्य में रणनीति होती है। यह नियोग रणनीति की "सही जगह" का हिस्सा है।

२) छंटाई में दर्शन (लूका १३:६-९ देखें)।

क) एक किसान को एक निश्चित पेड़ के लिए भावनात्मक चिंता नहीं होती है। यदि उसमें खेत न लगे तो उसे काट देना चाहिए (पेड़ कितना भी अच्छा क्यों न हो)।

ख) किसान के माली पेड़ को नहीं काटना चाहते थे। उन्हें अपने वेतन की चिंता है। उनके पास "खेत का दर्शन" नहीं है।

ग) नियोगों में भी ऐसा ही होता है।

(१) कई महान नियोग परियोजनाएं और कार्यक्रम मौजूद हैं। नियोग देखने में तो बहुत अच्छे लगते हैं लेकिन उनमें खेत नहीं लगते। कार्यक्रम को बदलने की आवश्यकता है।

टिप्पणियाँ -

(२) दुर्भाग्य से, कुछ सेवक किराए पर लेने वालों की तरह होते हैं। वे कार्यक्रम-केंद्रित हैं, न कि लक्ष्य-केंद्रित। याद रखें: हमें नियोगों को नियोग के सन्दर्भ में देखना चाहिए। लक्ष्य क्या है?

३) कटाई में दर्शन (मत्ती ९:३७,३८ देखें)।

क) ध्यान दें कि मज़दूरों के लिए प्रार्थना करने की चुनौती विशेष रूप से उन मज़दूरों के लिए प्रार्थना करना है जो फसल के लिए जाएंगे। फसल "सही समय" की बात करती है। फसल एक निश्चित समय पर आती है।

ख) यह मेहनत की एकाग्रता की भी बात करता है। अधिकतर खेत बीनने वालों को उन खेतों में भेजा जाता है जहाँ सबसे ज्यादा पके खेत होते हैं। अन्य क्षेत्रों में कम खेत बीनने होते हैं क्योंकि बीनने के लिए कम खेत होते हैं।

ग) नियोगों में भी ऐसा ही होता है।

(१) कुछ लोग वर्तमान में अनुत्तरदायी हैं। कुछ सेवकों को वहाँ तब तक ईमानदारी से मेहनत करनी चाहिए जब तक कि कोई सखेतता न मिल जाए। लेकिन अधिकतर लोगों को सबसे अधिक प्रतिक्रियाशील समूहों में जाना चाहिए।

(२) मत्ती ९:३७, ३८ के सन्दर्भ का अध्ययन करें। ध्यान दें कि मत्ती १० में यीशु अपने स्वयं के लवनेवालों को भेजते हैं। वह उन्हें यहूदियों के पास भेजते हैं। क्यों? वे पके हुए खेत थे (उद्धार के लिए) जो तोड़ने के लिए तैयार थे। सामरी और अन्यजाति बाद में पकेंगे। प्राथमिकता वे थे जो फसल के लिए तैयार थे।

३. सही तरीके।

क. यदि अधिक कार्य और थोड़े खेत है तो आपको दो समस्याओं में से एक का सामना करना पड़ सकता है। या तो आप कच्चे खेतों में कार्य कर रहे हैं या आप पके खेत में गलत तरीके का इस्तेमाल कर रहे हैं।

ख. तरीके बदलते हैं। अलग-अलग स्थितियों में अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। हालाँकि हम कार्यप्रणाली में निरंतरता देख सकते हैं। दुर्भाग्य से, निरंतरता अकसर विधियों की त्रुटि में आती है।

१) सही भाषा का प्रयोग न करना: आम लोगों की भाषा हमेशा सबसे प्रभावशाली होती है।

टिप्पणियाँ -

२) लोगों को मिलाना: "समरूप इकाइयाँ" बनाना महत्वपूर्ण है।

३) केवल लोगों को प्रचार करना: यह समझना चाहिए कि संसार के कई हिस्सों में निर्णय समूहों में किए जाते हैं।

४. सही लोग।

क. परमेश्वर अपने लोगों का उपयोग खेत काटने के लिए करते हैं।

ख. यह लोग:

१) पवित्र आत्मा से भरे हुए होने चाहिये (ध्यान दें कि यीशु ने अपने चेलों को अपना सेवकाई का कार्य तब तक शुरू करने की अनुमति नहीं दी जब तक कि वे स्वर्गीय सामर्थ्य" से नहीं भर गए थे [लूका २४:४९])।

२) यीशु के प्रति प्रतिबद्धता से भरे हुए होने चाहिये।

३) क्रूस के जीवन से भरपूर होने चाहिए।

ख. लोगों का आंदोलन।

१. संसार के अधिकांश लोग जो "पश्चिमी" नहीं हैं, एक ऐसी संस्कृति में रहना जारी रखते हैं जहाँ समुदाय व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण है।

क. व्यक्तिगत सुसमाचार का प्रचार इस संस्कृति के अनुरूप नहीं है।

ख. अकसर यह प्रभावी नहीं होता है क्योंकि:

१) लोग समूहों में निर्णय लेते हैं।

२) अपना विश्वास बदलने का अर्थ है अनाथ बनना। समुदाय से अलग होना।

३) एक परिवर्तित व्यक्ति को उस व्यक्ति के रूप में देखा जाता है जो "हमें" छोड़कर "उनमें" शामिल हो जाता है।

४) सुसमाचार को विदेशी के रूप में देखा जाता है। विश्वास बदलना कठिन होता जा रहा है। विश्वास बदलने वाले लोगों का समय कठिन होता है और वे धीरे-धीरे विश्वास में बढ़ते हैं क्योंकि उन्हें उनके प्राकृतिक परिवेश और संस्कृति से बाहर निकाल दिया जाता है।

टिप्पणियाँ -

२. संसार के कई लोगों को समूह में सुसमाचार सुनाने के द्वारा प्रचारित करने की आवश्यकता है।

क. इस प्रकार के सुसमाचार प्रचार को "लोगों का आन्दोलन" कहा जाता है।

ख. डोनाल्ड मैकगवरन ने जन आंदोलन में सुसमाचार प्रचार के लिए उपयोग करने के लिए सात सिद्धांतों का सुझाव दिया है।[५]

१) लक्ष्य के विषय में स्पष्ट रहें। लक्ष्य "बढ़ती, स्वदेशी कलीसियाओं का एक समूह, जिसका प्रत्येक सदस्य अपने रिश्तेदारों के निकट संपर्क में रहता है" का आयोजन करना है।

२) मुख्य केन्द्र एक स्पष्ट रूप से परिभाषित लोगों के समूह पर होना चाहिए।

३) परिवर्तित लोगों को यथासंभव अधिक से अधिक तरीकों से अपने लोगों के साथ रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

४) मसीह के लिए सामूहिक निर्णयों को बढ़ावा दें।

५) सच्चे अगुवे का कार्य जारी रखें। व्यक्तिगत रूप से शिष्यत्व करने का प्रयास न करें (परिवर्तित लोगों को चेला बनाने की अनुमति दें)। पौलुस की तरह पवित्र आत्मा पर विश्वास रखें। नए क्षेत्रों में जाने के लिए तैयार रहें जहाँ उसी समूह के सदस्य अभी भी पह से बाहर हैं। पिछले परिवर्तित लोगों को भी ऐसा करने का निर्देश दें। नियोग का काम जारी रखें।

६) अपनी जाति के बचे हुए नए मसीहियों पर बल दिया जाना चाहिए। वे बस बेहतर जाति के लोग हैं। वे दूसरों को बेहतर जाति के लोग बनने में मदद करेंगे।

७) भाईचारे पर बल दें। यह क्रियाशील है जिसका उपयोग अंततः लोगों के आंदोलन को बढ़ाने के लिए किया जाएगा।

ग. अनोखी समाधान रणनीति।

१. विभिन्न स्थितियों के लिए अलग-अलग रणनीतियों की आवश्यकता होती है। इन अनोखी रणनीतियों को कैसे विकसित किया जाता है?

क. सबसे पहले, हमें लोगों को जानना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें उनकी आवश्यकताओं को जानना चाहिए क्योंकि वे उन्हें समझते हैं। ऐसा करने के लिए, हमें कुछ बुनियादी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

वैश्विक नियोग II

टिप्पणियाँ -

१) वे कहाँ हैं? वे कहाँ रहते हैं?

२) उन्हें लोगों का समूह क्यों माना जाता है?

३) ऐसी कौन-सी बात है जो इस समूह के लोगों को दूसरों से अलग बनाती है?

क) भाषा।

ख) संस्कृति।

ग) सामाजिक संरचना।

घ) पेशा (कार्य)।

ङ) आर्थिक स्थिति।

४) वे मसीह की ओर अपने आंदोलन में कहाँ पाए जाते हैं?

क) यहाँ हम एंगेल स्केल का उपयोग कर सकते हैं। एंगेल स्केल लोगों को सुसमाचार के विषय में उनकी जागरूकता के पैमाने पर पहचानने का एक साधन है।[६]

ख) एंगेल स्केल की सीमा:

(१) सुसमाचार के विषय में कोई जागरूकता नहीं है।

(२) सुसमाचार का प्रारंभिक रूप से अनावरण।

(३) सुसमाचार की बुनियादी विशेषताओं को समझना।

(४) सुसमाचार और उद्धार के मार्ग को समझना।

(५) बाइबल की समझ में वृद्धि।

ग) जागरूकता के माप की तुलना कई प्रकार के दृष्टिकोणों से की जाती है:

(१) नकारात्मक।

(२) बीच में/निष्पक्ष।

(३) सकारात्मक।

टिप्पणियाँ -

घ) इन मापों को एक ग्राफ पर अंकित किया जाता है और इसका उपयोग लोगों के मसीह के प्रति आंदोलन का पता लगाने के लिए किया जा सकता है।

ङ) हम जिस रणनीति का उपयोग करते हैं वह आपके मूल्यांकन पर निर्भर करेगी कि लोग मसीह की ओर अपने आंदोलन में किस स्तर पर हैं।

५) वे सुसमाचार के प्रति कितने ग्रहणशील है?

क) इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए कई प्रभावित करने वालों कारकों पर विचार किया जाना चाहिए।

ख) हम एक उत्तर को परिभाषित करने के लिए विरोध/ग्रहणशीलता पैमाने (एक ऐसा पैमाना जो लोगों के समूह को "दृढ़ता से विरोध" से सुसमाचार के लिए "सुसमाचार के लिए दृढ़ता से अनुकूल" के लिए निरंतरता पर रखता है) का उपयोग कर सकते हैं।[७]

ख. अब हमें एक नियोजन प्रक्रिया से गुजरना होगा। इस प्रक्रिया में सहायता के लिए हम निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उपयोग कर सकते हैं। याद रखें, यह एक प्रक्रिया है, एक प्रश्न दूसरे की ओर ले जाता है और अंतिम प्रश्न पहले की ओर ले जाता है।

१) परमेश्वर हमें किन लोगों तक पहुँचाना चाहते हैं?

२) वे किस प्रकार के लोग हैं?

३) किन लोगों को उन तक पहुँचना चाहिए?

४) उन तक कैसे पहुँचा जाना चाहिए?

५) इसके परिणाम क्या होंगे?

२. सुसमाचार सुनाना एक रहस्य है (यूहन्ना ३:८)।

क. यह एक रहस्य है कि परमेश्वर लोगों के बीच कैसे कार्य करते और उन्हें बदल देते हैं। कभी-कभी परिणाम देखे जा सकते हैं लेकिन इसकी प्रक्रिया स्पष्ट नहीं है।

ख. यह एक रहस्य है कि ऐसा करने के लिए परमेश्वर मनुष्यों को चुनते हैं।

ग. रहस्य और योजना संगत प्रतीत नहीं होती है। फिर भी हमें योजना बनानी चाहिए। सुसमाचार प्रचार के रहस्य का एक हिस्सा यह है कि पवित्र आत्मा हमारी योजनाओं के निर्माण में हमारी अगुवाई कर सकता है।

३. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अनोखी समाधान रणनीति लोगों की वास्तविक, व्यावहारिक समस्याओं का उत्तर देती है। उन समस्याओं का समाधान सुसमाचार है।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

इस अध्याय के विचारों और अवधारणाओं का उपयोग करते हुए, शिक्षक को इस अध्याय के अंत में एक परियोजना कार्य में कक्षा की अगुवाई करनी चाहिए। इसे यथासंभव व्यावहारिक बनाने का प्रयास करें। ऐसे लोगों के समूह का उपयोग करें जो आपके क्षेत्र में हो या जिसमें छात्रों की रुचि हो। शायद छात्र समूह के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ शोध कर सकते हैं।

IV. सुसमाचार सुनाना, विकास, और कलीसिया स्थापित करना।

क. सुसमाचार सुनाना।

१. सुसमाचार सुनाने के तरीके।

क. कभी-कभी यह तरीका उतना ही महत्वपूर्ण होता है जितना कि संदेश। एक अप्रभावी विधि के परिणामस्वरूप लोग संदेश को कभी नहीं सुनते। यदि संदेश सुननेवाले की बातें समझ नहीं आती हैं तो संदेश भी समझ नहीं आएगा।

ख. उदाहरण के लिए, चीन में परिवार एक बहुत शक्तिशाली सामाजिक शक्ति होती है।

१) एक रणनीति जो परिवारों का उपयोग परिवारों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए करती है, उस रणनीति से कहीं अधिक प्रभावी होगी जो परिवारों को प्रचारित करने के लिए एकल महिलाओं का उपयोग करती है।

२) यह उदाहरण सुसमाचार सुनाने के निम्नलिखित सिद्धांत के अनुरूप है। सुसमाचार पहले से मौजूद सामाजिक संरचनाओं के भीतर सबसे प्रभावी ढंग से फैलता है। संसार के कई अन्य क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ परिवार सामाजिक संरचना के सबसे शक्तिशाली हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है।

ग. व्यक्तिवादी पश्चिमी लोगों के लिए समूह के निर्णयों के महत्व को समझना कठिन है।

चर्चा विषय

निम्नलिखित विश्वदृष्टिकोण के अंतरों पर चर्चा करें।
पश्चिमी तर्क देते हैं, "मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ"।
संसार में अन्य लोग कहते हैं, "मैं भाग लेता हूँ इसलिए मैं हूँ"।

टिप्पणियाँ -

१) कई संस्कृतियों में, पहचान समूह में भागीदारी पर आधारित होती है।

२) इस प्रकार की संस्कृतियों में, इस समझ के साथ प्रचार करना सबसे प्रभावी होता है।

३) निर्णय लेने वालों के प्रति संवेदनशील होना सबसे महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, यदि एक अफ्रीकी जनजाति के मुखिया को परिवर्तित किया जा सकता है तो पूरी जनजाति उसका अनुसरण करेगी।

२. बाइबल के आंकड़ों से पता चलता है कि प्राप्तकर्ताओं और सुसमाचार प्रचार के प्रतिनिधियों के रूप में परिवारों का विषय बाइबिल में बहुत आम है।

क. परिवार की अवधारणा बहुत मज़बूत है (इफि. ३:१५; इफि. २:१९; गला. ६:१०; कुलु. ३:१८-४:१; इफि. ५:२२-६:९; १ पत. २:१८-३:७)।

ख. परिवार परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता की प्रतिज्ञा करता है (यहोशू २४:१५)।

ग. परिवार परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है (निर्ग. १२:३, ४)।

घ. शिक्षण पारिवारिक इकाइयों के भीतर किया जाता था (प्रेरितों. २०:२०)।

ङ. परिवारों को प्रचारित करके परिवर्तित किया जाता है (प्रेरितों. १०:७, २४; १६:१५, ३१-३४; १८:८; १ कुरि. १:१६; १६:१५; रोमियों १६:२३)।

च. प्रचार करने के लिए घरों का इस्तेमाल किया जाता था (१ कुरि. १६:१९; रोमियों १६:५)।

छ. घरों का इस्तेमाल विश्वासियों के पालन-पोषण के लिए किया जाता था (२ तीमु. १:१६; ४:१९; कुलु. ४:१५)।

ख. विकास।

१. पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान मसीह ने शारीरिक और आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति की। कलीसिया को भी ऐसा ही करना चाहिए।

क. "सामाजिक सुसमाचार" (इसका अर्थ है कि शारीरिक और सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति प्रतिक्रिया पर अधिक बल दिया गया है) "बाइबल के सुसमाचार" के विरोध में नहीं है (इसका अर्थ है आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने पर बल देना)। वे दोनों एक साथ मिले हुए हैं।

ख. कई बार, परमेश्वर सामाजिक सुसमाचार को बाइबल के सुसमाचार के परिचय के रूप में उपयोग करते हैं। एक शारीरिक आवश्यकता पूरी होती है, जिसके परिणामस्वरूप सुसमाचार संदेश को साझा करने का अवसर मिलता है (प्रेरितों के काम ३ देखें)।

टिप्पणियाँ -

ग. कई बार, परमेश्वर बाइबल के सुसमाचार का उपयोग सामाजिक सुसमाचार के परिचय के रूप में करते हैं। अर्थात्, वह आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होने के अपने दावे की सच्चाई को लागू करने और सबित करने के तरीके के रूप में शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं (मरकुस १६:२० के निहितार्थ देखें)।

२. कई बार सामाजिक सुसमाचार एक ऐसा रास्ता बन जाता है जिसके द्वारा बाइबल के सुसमाचार को प्रस्तुत किया जा सकता है। कई मामलों में किसी देश में प्रवेश करने का एकमात्र तरीका सामाजिक सहायता प्रदान करना होता है।

३. इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि सामाजिक सहायता एक संस्कृति में प्रवेश करने का एक बहुत ही स्वाभाविक तरीका प्रदान करती है। एक कलीसिया रोपण समूह को खतरे के बिना एक संस्कृति में आत्मसात किया जा सकता है। समुदाय में स्वयं को स्थापित करने के बाद वे अपने सुसमाचार प्रचार लक्ष्यों के साथ अधिक प्रभावी होंगे।

४. विकास की चार अलग-अलग रणनीतियाँ।

क. पहली दो रणनीतियाँ एक समाज की संरचनाओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

१) आर्थिक विकास रणनीति।

क) किसी देश की आर्थिक संरचना को बदलने के लिए बाहर से सहायता मिलती है।

ख) उदाहरण के लिए, अन्य देश गरीब देशों को अनुकूल व्यापार दे सकते हैं।

२) राजनीतिक मुक्ति रणनीति - परिवर्तन भीतर से आता है जो सरकारी संरचना को बदलने की कोशिश करता है।

टिप्पणियाँ -

ख. अंतिम दो रणनीतियाँ एक समाज की आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

१) राहत देने की रणनीति - कठिन परिस्थितियों में रह रहे लोगों को राहत पहुँचाने के लिए बाहर से सहायता मिलती है।

२) सामुदायिक विकास रणनीति।

क) लोगों को स्वयं की सहायता करने के लिए भीतर से बदलाव आता है।

ख) उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति स्वास्थ्य केंद्र शुरू कर सकता है और वह स्थानीय लोगों को प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल करने का प्रशिक्षण दे सकता है।

ग. सभी चार रणनीतियों का उपयोग मसीही संगठनों द्वारा किया जा सकता है। हालाँकि, कलीसिया रोपण के सन्दर्भ में, सामुदायिक विकास सबसे सुसंगत रणनीति है।

५. विभिन्न शारीरिक विकास कारक।

क. पानी।

ख. स्वच्छता।

ग. भोजन।

घ. ईंधन।

ङ. स्वास्थ्य।

च. घर और वस्त्र।

छ. आय उत्पादन।

ज. शिक्षा।

झ. संचार और परिवहन।

चर्चा विषय

विचार करें कि आवश्यकता के इन क्षेत्रों में से कुछ में सामुदायिक विकास कैसे एक कलीसिया रोपण समूह के लिए एक समुदाय को आशीष देने के तरीके के रूप में कार्य कर सकता है, जबकि यह स्वयं को सुसमाचार सुनाने के उद्देश्य के लिए स्थापित करता है। यह भी विचार करें कि वहाँ एक समूह की अवधारणा का उपयोग कैसे किया जा सकता है जहाँ विशेष कौशल वाले पेशेवर विशेष सेवकाई के वरदानों वाले सेवकों के साथ जुड़ सकते हैं।

टिप्पणियाँ -

ग. कलीसिया रोपण।

१. कलीसियाओं की लगातार बढ़ोतरी एक कलीसिया रोपण विधि है जिसे जॉर्ज पैटरसन के नाम से जाना जाता है।[८]

क. सिर्फ इसलिए कि हम (दूसरे देश में) जाते हैं इसका अर्थ यह नहीं है कि हम मसीह का पालन कर रहे हैं।

ख. हमें बढ़ोतरी और पुनरुत्पादन के लिए जाना चाहिए।

ग. बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस प्रकार कलीसियाओं की स्थापना करते हैं। यदि हम कलीसियाओं को इस तरह से स्थापित करते हैं जिससे वे स्वाभाविक रूप से (पौधों की तरह) विकसित हो सकें, तो वे सामान्य रूप से पुनरुत्पादन करेंगी (मत्ती १३; मरकुस ४:२६-२९; यूहन्ना १५:१-६ देखें)।

२. जॉर्ज पैटरसन ने होंडुरास में इस तरह कलीसिया की बढ़ोतरी की।

क. एक पारंपरिक बाइबल संस्थान का उपयोग करने के बजाय उन्होंने विस्तार से धार्मिक शिक्षा का उपयोग किया। लोगों को एक प्रशिक्षण विद्यालय में लाने के बजाय उन्होंने लोगों को प्रशिक्षण दिया।

ख. पैटरसन कलीसिया की बढ़ोतरी करने के लिए एक विस्तार कार्यक्रम का उपयोग करते समय विचार करने के लिए चार सिद्धांत के विषय में बताते हैं।

१) खेतों को देखें।

२) देह की उन्नति करें।

३) आज्ञाकारिता को अपना लक्ष्य बनाएं।

४) सहज बढ़ोतरी के लिए संगठित हों।

३. सिद्धांत #१ - खेतों को देखें।

क. उत्तरदायित्व के अपने क्षेत्र को परिभाषित करें (देखें यूहन्ना ४:३५; २ कुरि. १०:१२-१६)।

१) आप कहाँ कार्य कर रहे हैं? आपका दर्शन क्या है?

२) कुछ लोग कहते हैं कि उनके पास एक दर्शन है, लेकिन यह परिभाषा के बिना है। उनके पास प्रत्येक बात के लिए एक दर्शन है। दरअसल, वे दर्शन प्राप्त हुए लोग नहीं हैं। वे केन्द्रित नहीं हैं।

टिप्पणियाँ -

३) दर्शन की कमी के दो कारण हो सकते हैं।

क) सबसे पहले, आपके पास कोई दर्शन है ही नहीं।

ख) दूसरा, आपके पास प्रत्येक दर्शन हो सकते थे। लेकिन अभी तक कोई दर्शन नहीं है।

ख. आपको किस प्रकार की कलीसिया स्थापित करनी चाहिए।

१) एक कलीसिया जो स्वयं की बढ़ोतरी कर सकती है वह क्या करने में सक्षम होगी?

२) एक कलीसिया और एक उपदेश की जगह के बीच का अंतर जानें।

क) प्रचार का स्थान एक ऐसा स्थान है जहाँ लोग किसी को उपदेश देने या सिखाने के लिए इकट्ठा होते हैं। यह प्रार्थना, गीत आदि के साथ कलीसिया जैसा हो सकता है। लेकिन बहुत कम लोग बपतिस्मा लेते हैं। प्रभु भोज बहुत कम दिया जाता है। मसीहियों और गैर-मसीहियों के बीच अंतर करना मुश्किल होता है। स्थानीय अगुवाई नहीं होती है। यह आमतौर पर सेवक के अधीन होता है।

ख) एक कलीसिया उन लोगों की देह है जो उस स्थान से परिभाषित नहीं होते हैं जहाँ वे मिलते हैं, बल्कि अपने सम्बन्धों से परिभाषित होते हैं। स्थानीय अगुवाई को प्रशिक्षित और स्थापित किया जाता है। पैटरसन एक कलीसिया को "चेलों की एक मण्डली के रूप में परिभाषित करते हैं जो प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करते हैं। ये पश्चाताप करने वाले, बपतिस्मा लेने वाले विश्वासी हैं जो प्रभु भोज लेते हैं, एक दूसरे से प्रेम करते हैं, अपने पड़ोसियों के प्रति दया दिखाते हैं, प्रार्थना करते हैं, दान देते हैं और सुसमाचार का प्रचार करते हैं।"

ग. कलीसिया रोपण के लिए सबसे छोटे मार्ग को परिभाषित करें।

१) ऐसे अतिरिक्त कदमों का प्रयोग न करें जो अनावश्यक हों। वे केवल सेवक द्वारा अधिक नियंत्रण की ओर ले जाते हैं।

२) याद रखें: कलीसिया स्वाभाविक रूप से तभी विकसित होती हैं यदि वे स्वाभाविक रूप से स्थापित की जाए। एक साधारण कलीसिया को स्थापित करने के लिए अपने विश्वास को बहुत साधारण होने दें। परमेश्वर इसे स्वाभाविक रूप से विकसित करेंगे।

क) यही प्रेरित पौलुस के तरीके का रहस्य था। उनके साधारण विश्वास ने उन्हें एक बुनियादी कलीसिया स्थापित करने की अनुमति दी। उन्होंने कलीसिया के स्वाभाविक विकास पर विश्वास रखा क्योंकि उन्होंने एक स्थान के बजाय एक देह स्थापित की थी। इसके अलावा, उन्होंने पौष्टिक भोजन पर विश्वास किया कि पवित्र आत्मा शिशु कलीसिया को खिलाने में सक्षम था।

टिप्पणियाँ -

ख) पौलुस की तरह कलीसिया रोपण करने वालों को प्रत्येक वर्ष एक ही जगह पर नहीं रहना चाहिए। यदि वे विश्वासियों का एक निकाय बना रहे हैं और उन्हें बदलने के लिए स्थानीय अगुवाई को प्रशिक्षित कर रहे हैं, तो कलीसिया को उचित समय में स्थापित किया जा सकता है।

(१) याद रखें, जब हम कहते हैं "रोपण", तब हमारा अर्थ वास्तविक परिवर्तित लोगों के एक केंद्र से है जो प्रशिक्षित स्थानीय अगुवों के निर्देशन में अपने विश्वास का अभ्यास कर रहे हैं।

(२) बाइबल के अनुसार कलीसिया रोपण करने वाले लोग राज्य का निर्माण करते हैं। वे स्वयं को पुन: पेश करने में थोड़ा समय व्यतीत करते हैं। इससे बढ़ोतरी होती है।

(३) अन्य कलीसिया रोपण करने वाले अपने स्वयं के राज्य का निर्माण करते हैं। वे वर्षों तक वहीं रहते हैं क्योंकि वे स्वयं को पुन: पुनरुत्पादन न करके, अपने राज्यों पर नियंत्रण रखते हैं। केवल वे ही कार्य कर सकते हैं। कोई पुनरुत्पादन या बढ़ोतरी नहीं होती है।

३) पैटरसन इन पाँच चरणों की पेशकश करते हैं जिनका उपयोग होंडुरास में किया गया था।

क) प्रारंभ में, घर के पुरुष मुखियाओं को गवाही दें। मित्रों और रिश्तेदारों को गवाही देने के लिए उनके साथ जाएं। जब तक स्थानीय पुरुषों को उनकी अगुवाई करने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जाता है, तब तक एक सार्वजनिक कलीसिया की सेवकाई न करें।

ख) पश्चाताप करने वाले विश्वासियों को तुरंत बपतिस्मा दें।

ग) जितनी जल्दी हो सके अगुवाई की बहुलता स्थापित करें (प्रेरितों १४:२३)। इन अगुवों को आज्ञा दें कि वे अपने लोगों को प्रभु के पास जीतकर लेकर आयें और सीखें कि उनकी चरवाही कैसे करनी है। उन्हें प्रभु भोज की सेवा करने और लोगों को मसीह की आज्ञाओं का पालन करने में अगुवाई करने के लिए अधिकृत करें। वे अभी तक प्रचार के लिए तैयार नहीं हैं।

घ) इन प्राचीनों के साथ विस्तार प्रशिक्षण शुरू करें। जितनी बार संभव हो उनसे मिलें जब तक कि वे संगठित न हो जाएं।

ङ) कलीसिया की गतिविधियों से सम्बंधित आज्ञाओं की एक सूची प्रदान करें। सूची का उपयोग प्राचीनों को प्रशिक्षित करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में करें।

टिप्पणियाँ -

घ. अपनी सेवकाई को परिभाषित करें।

१) आप अपनी सेवकाई में क्या करते हैं?

२) आपको अपनी सेवकाई को संक्षिप्त और विशेष वाक्य के साथ परिभाषित करने में सक्षम होना चाहिए।

क) ऐसा करने से पहले आपको सेवकाई के क्षेत्र में कुछ वर्षों की आवश्यकता हो सकती है।

ख) उन वरदानों पर विचार करें जो परमेश्वर ने आपको दिए हैं। उन्हें परिभाषित करें। उनका विकास करें। सबसे महत्वपूर्ण बात, उनका उपयोग दूसरों से प्रेम करने के लिए करें (यूहन्ना १७:२६; १ कुरिन्थियों १३:१-३)।

४. सिद्धांत #२ - देह की उन्नति करना।

क. इफिसियों ४:११,१२ का अध्ययन करें।

१) ध्यान दें कि सेवक का कार्य कलीसिया के सदस्यों को सेवकाई करने के लिए प्रशिक्षित करना है।

२) बढ़ोतरी एक क्रिया है।

ख. कलीसिया के सदस्यों के बीच प्रेम और सेवा के सम्बन्ध बनाएं।

१) कलीसिया की अगुवाई की सेवकाई छोड़ने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। उन्हें अधिकार और उत्तरदायित्व को त्यागने और सौंपने में सक्षम होना चाहिए।

२) एक कमज़ोर अगुवा अपनी मंडली पर हावी होता है।

३) एक मज़बूत अगुवा सभी सदस्यों के बीच सम्बन्धों को बढ़ावा देता है। वह मज़बूत सम्बन्धों का एक जाल बनाता है।

क) वह सेवकाई के सारे कार्य करने की कोशिश नहीं करता।

ख) वह दूसरों को उनका अपना कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करता है।

टिप्पणियाँ -

ग. इस तरह से सिखाएं कि शिक्षाएं कई गुना बढ़ जाएं (२ तीमुथियुस २:२ देखें)।

१) ध्यान दें कि पौलुस कैसे पुनरुत्पादन को बढ़ावा देते हैं।

क) सबसे पहले, वह तीमुथियुस को सिखाते हैं। उनके बीच का सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ है। तीमुथियुस को एक प्रशिक्षु के रूप में पढ़ाया जाता था। पौलुस के साथ कार्य करने के दौरान उन्हें सिखाया गया था।

ख) अब तीमुथियुस को भी ऐसा ही करना चाहिए। उन्हें उन लोगों को आज्ञा देनी चाहिए जिन्हें वह पुनरुत्पादन की प्रक्रिया जारी रखने के लिए प्रशिक्षित करते हैं।

२) स्वाभाविक अगुवों को आगे आने दें। अगुवों को बनाने की कोशिश न करें।

३) प्रशिक्षण को व्यावहारिक बनाएं।

क) छात्र की परीक्षा कलीसिया में उसकी सेवकाई होनी चाहिए। शिक्षक को यह देखना चाहिए कि छात्र जो सीख रहा है उसे वह कलीसिया की वास्तविक स्थितियों पर कैसे लागू करता है।

ख) जिस कलीसिया में छात्र सेवा कर रहा है, उस कलीसिया की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षक तय करता है कि छात्र को क्या पढ़ाना है।

घ. अंतर-कलीसिया सम्बन्ध स्थापित करें।

१) अच्छे अंतर-कलीसिया सम्बन्धों के उदाहरण को देखने के लिए निम्नलिखित अनुच्छेदों का अध्ययन करें: प्रेरितों. ११:१९-२६; ११:२९, ३०; १४:२६, २७; १५:१, २, २८-३१।

२) पुरानी और नई कलीसियाओं को आपसी उन्नति का अभ्यास करना चाहिए।

क) पुरानी कलीसिया नई कलीसिया में "वृद्धि करने वाले कार्यकर्ता" को भेज सकती है। कार्यकर्ता जितनी बार आवश्यकता हो इस तरह से विस्तार कक्षाओं की पेशकश कर सकता है।

ख) नई कलीसिया एक छात्र कार्यकर्ता को पुरानी कलीसिया में भेज सकती है। छात्र कार्यकर्ता नियमित आधार पर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है।

टिप्पणियाँ -

३) इस स्तर पर भी बढ़ोतरी और पुनरुत्पादन सिद्धांत का अभ्यास किया जाना चाहिए।

क) पुरानी कलीसियाओं को एक समय में एक या दो नई कलीसिया विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए।

ख) इन नई कलीसियाओं को इस प्रक्रिया को दोहराने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

ग) कलीसियाओं को नियंत्रित करने का प्रयास न करें। कलीसियाओं को अन्य कलीसियाओं को नियंत्रित करने की अनुमति न दें।

घ) आत्मा को स्वतः ही कलीसियाओं को विकसित करने दें। पुनरुत्पादन की प्रेरणा देह से ही आती है। इसका अर्थ है कि उन्हें बाहरी नियंत्रण से स्वतंत्र रहना चाहिए। प्रेरितिक कार्य को नई कलीसिया को स्वतंत्र होने देना सीखना चाहिए। यदि नहीं, तो यह एक विकलांग संतान उत्पन्न करेगी। वृद्धि स्वाभाविक नहीं होगी।

चर्चा विषय

कलीसिया का निर्माण किये जाने सिद्धांत की चर्चा को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित आरेखों का प्रयोग करें। ध्यान दें कि गुणवत्ता केंद्र है। मात्रा गुणवत्ता का परिणाम है। यह वृद्धि के बाइबल आधारित सिद्धांतों के अनुरूप है (देखें लूका १६:१०; मरकुस ४:३०-३२)।

एक अप्रभावी रणनीति

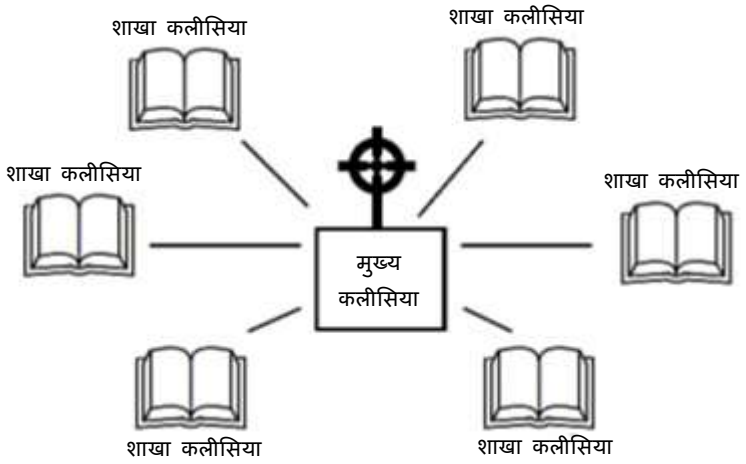

ध्यान दें: "मुख्य" कलीसिया सेवकाई के सभी कार्य करने का प्रयास करती है। अपना स्वयं का राज्य बनाती है। केन्द्र बिंदु मात्रा और नियंत्रण पर है। मुख्य कलीसिया से जुडी हुई कलीसिया मुख्य कलीसिया द्वारा नियंत्रित होती हैं।

टिप्पणियाँ -

एक प्रभावशाली रणनीति

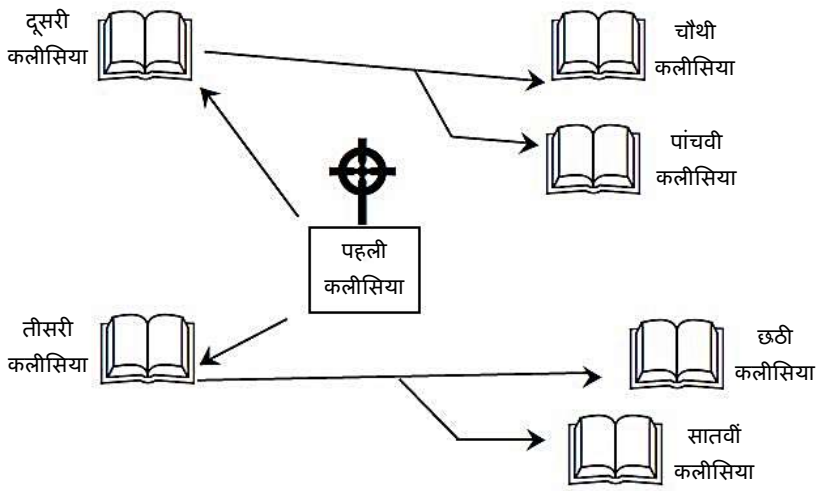

ध्यान दें: पहली कलीसिया कुछ कलीसियाओं को स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित करती है। यह परमेश्वर के राज्य का निर्माण करती हैं। गुणवत्ता और स्वतंत्रता पर बल दिया गया है। नई कलीसिया स्वाभाविक रूप से बढ़ने और पुन: पुनरुत्पादन करने के लिए स्वतंत्र हैं।

५. सिद्धांत #५- आज्ञाकारिता को अपना लक्ष्य बनाएं।

क. आज्ञाकारिता के सन्दर्भ में सुसमाचार प्रचार के उद्देश्यों को परिभाषित करें।

१) लक्ष्य यह होना चाहिए कि वे चेले बनाएं जो प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करें।

२) हमें इस लक्ष्य के अनुसार अपने कार्य का मूल्यांकन करना चाहिए। क्या परिवर्तित लोग यीशु की आज्ञाओं का पालन कर रहे हैं?

३) कौन-सी मुख्य आज्ञाएं सिखाने योग्य हैं? पैटरसन निम्नलिखित सूची प्रदान करते हैं:

क) पश्चाताप और विश्वास करें (मर. १:१५)।

ख) बप्तिस्मा लें (प्रेरितों. २:३८)।

ग) प्रेम (यूहन्ना १३:३४)।

घ) प्रभु भोज लें (लूका २२:१७-२०)।

टिप्पणियाँ -

ङ) प्रार्थना करें (यूहन्ना १६:२४)।

च) दान दें (मत्ती ६:१९-२१)।

छ) गवाही दें (मत्ती २८:१८-२०)।

४) प्रत्येक नए परिवर्तित लोगों को इन आज्ञाओं का पालन करना सिखाएं।

ख. आज्ञाकारिता के सन्दर्भ में धार्मिक शिक्षा के उद्देश्यों को परिभाषित करें।

१) कार्य परिणाम होना चाहिए। शिक्षा के द्वारा फल दिखने चाहिए।

२) लक्ष्य केवल एक छात्र के दिमाग में कुछ डाल देना नहीं हो सकता। छात्र को जो कुछ उसने सीखा है उसके साथ कुछ व्यावहारिक करना चाहिए।

६. सिद्धांत #६- सहज बढ़ोतरी के लिए संगठित हों।

क. एक विस्तार श्रृंखला का निर्माण करें - जितनी जल्दी हो सके एक कलीसिया को विस्तार कार्यकर्ताओं को नई कलीसिया स्थापित करने के लिए भेजना चाहिए जो अन्य कलीसियाओं को स्थापित करेंगे। कलीसियाओं की एक श्रृंखला इसका परिणाम होगा।

ख. नए विश्वासियों को अपने रिश्तेदारों और मित्रों को प्रचार करने के लिए प्रशिक्षित करें। उनके साथ सुसमाचार प्रचार करने के लिए जाएं। फिर उन्हें स्वतंत्र रूप से प्रचार करने की अनुमति दें।

ग. योजना प्रक्रिया में नागरिकों को शामिल करें। उन्हें पुनरुत्पादन की रणनीति बनाने की अनुमति दें।

घ. विकास की कमी समस्याओं को दर्शाती है। कलीसिया का बढ़ना स्वाभाविक है।

ङ. पैटरसन बचने के लिए ६ बातें सिखाते हैं:

१) "निर्णय लेने के अनुष्ठानों" से बचें (वेदी की पुकार, हाथ उठाना आदि)। यह अधिकांश संस्कृतियों के लिए बहुत ही नया होगा। ये निर्णय लेने के अनुष्ठान भी पश्चाताप पर बल नहीं देते और बपतिस्मे को एक नए विश्वासी की पुष्टि करने के लिए परमेश्वर के तरीके के रूप में प्रतिस्थापित करते हैं।

२) बपतिस्मे में देरी करने से बचें (देखें १०:४७, ४८; ८:३६, ३७; १६:३३)।

टिप्पणियाँ -

३) सेवकाई वित्तीय सहायता से बचें। पैटरसन कहते हैं, "कभी भी विदेशी सहायता पर निर्भर होकर कलीसिया न बनाएं। यह द्वेष, कमज़ोर कलीसिया और सेवकाई नियंत्रण उत्पन्न करता है।

४) देरी करने से बचें। नई स्थापित कलीसिया को तुरंत महान आज्ञा का पालन करना शुरू कर देना चाहिए।

५) संचार को टूटने न दें। "विस्तार श्रृंखला" में सभी कलीसियाओं के साथ संवाद करना जारी रखें। याद रखें: संचार समान नियंत्रण नहीं करता है। कलीसिया स्थापित करने वालों के लिए कलीसियाओं के साथ सम्बन्ध बनाए रखना महत्वपूर्ण है। यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि कलीसिया स्थापित करने वाला कलीसियाओं को नियंत्रित नहीं करता है।

६) विकास के लिए दबाव बनाने से बचें। हम कलीसिया को विकसित नहीं करते हैं। हम इसे बढ़ने देते हैं। यदि कलीसिया जीवित है तो यह स्वाभाविक रूप से विकसित होगी।

V. वैश्विक मसीहियों का सामूहिक कार्य।

क. परमेश्वर के साथ भागीदार बनना।

१. विश्व मसीही बनना (नियोग अनुसंधानकर्ता रिसर्चर डेविड ब्रायंट के अनुसार)।

क. विश्वदृष्टिकोण विकसित करें।

१) मसीह में परमेश्वर के विश्वव्यापी उद्देश्य को देखें।

२) मसीह के द्वारा संभावनाओं से भरे संसार को देखें।

३) मसीह के बिना लोगों से भरे संसार को देखें।

४) मसीह के कार्य के साथ अपने भाग को देखें।

ख. विश्वदर्शन को बनाए रखें।

१) विश्व मसीही बनें।

२) विश्व के अन्य मसीहियों के साथ जुड़ें।

३) दर्शन का पालन करने की योजना बनाएं।

टिप्पणियाँ -

ग. विश्वदर्शन का पालन करें।

१) जैसे आप नियमित रूप से अपने दर्शन का निर्माण करते हैं, आज्ञा का पालन करें।

२) जैसे ही आप प्रेम के द्वारा पहुँचते हैं, आज्ञा का पालन करें।

३) जैसे आप अन्य मसीहियों को अपना दर्शन देते हैं वैसे ही आज्ञा का पालन करें।

२. दर्शन का पालन करना। आज्ञाकारिता का पहला और सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक स्तर प्रार्थना है। सभी मसीही संसार के लोगों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।

३. विश्व के मसीही की जीवन शैली। जब आपके जीवन का केन्द्र बिंदु बदल जायेगा तब आपकी जीवनशैली भी बदल जाएगी। आप अपने संसाधनों को संसार के लोगों की ओर निर्देशित करना चाहेंगे।

ख. परमेश्वर के लोगों के साथ भागीदार बनना।

१. विश्व मसीही सेल ग्रुप।

क. अन्य विश्व मसीहियों को खोजें और संगठित करें। सेल ग्रुप बनाएं जो दर्शन का पोषण करेंगे और इसे बढ़ाएंगे।

१) एक दूसरे का सहयोग दें। एक दूसरे को दर्शन में जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करें और चुनौती दें।

२) सेल ग्रुप नियोग (वर्तमान घटनाओं, आंकड़ों, आदि) के विषय में जानकारी देने या प्राप्त करने का स्रोत होना चाहिए।

३) सेल ग्रुप में योजना बनाई जा सकती है। समूह इस दर्शन का पालन कैसे कर सकता है, इसके सम्बन्ध में विशेष योजनाएं बनाई जा सकती हैं।

ख. सेल ग्रुप की वजह से पूरी कलीसिया प्रभावित होनी चाहिए। इसे दर्शन बाँटना चाहिए और इसमें शामिल होने के लिए दूसरों को चुनौती देनी चाहिए।

२. सेल ग्रुप या उसके व्यक्तिगत सदस्य स्वयं को एक उपयुक्त नियोग संस्था से जोड़ने में सक्षम हो सकते हैं।

क. अलग-अलग नियोगों के सेवकों को एक साथ कार्य करना सीखना चाहिए।

ख. नियोग संस्थाओं के द्वारा अकसर ऐसा होता है कि विभिन्न पृष्ठभूमि के अजनबियों से एक साथ कार्य करने की उम्मीद की जाती है। सेवकों के समूह के भीतर समुदाय का विकास किया जाना चाहिए।

वैश्विक नियोग II

टिप्पणियाँ -

ग. वैश्विक मसीहियों का सामूहिक कार्य।

१. हाल ही में, नियोगों में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की एक नई भावना दिखाई दे रही है। महान आज्ञा को पूरा करने के लिए विभिन्न संप्रदायों और आंदोलनों के विभिन्न समूह एक साथ आ रहे हैं।

२. वे शिक्षा, सूचना, वित्त और तकनीकी सहायता में अपने संसाधनों का संयोजन कर रहे हैं। अलग-अलग कार्य क्षेत्रों के साथ अलग-अलग समूह एक ही उद्देश्य के तहत एकजुट हो रहे हैं। कलीसिया अधिकाधिक **मसीह की देह** के समान दिख रही है (रोमियों १२:४,५)।

टिप्पणियाँ -

वैश्विक नियोग II: अंतिम टिप्पणियाँ

[१]लुईस, जोनाथन, एड. वैश्विक नियोग - भाग II (पासाडेना, सीए: विलियम केरी लाइब्रेरी, १९८७)। इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा के प्रमुख बिंदुओं का प्रवाह सीधे वैश्विक नियोग - भाग II से अनुकूलित किया गया है। अनुमति द्वारा उपयोग किया जाता है।

[२]विंटर, राल्फ डी., द अनफिनिश्ड टास्क। पासाडेना: विलियम कैरी लाइब्रेरी, १९७८।

[३]एलन, रोलैंड, मिशनरी मेथड्स: सेंट. पॉल्स ओर आवरस? ग्रैंड रैपिड्स: अर्डमैंस, १९६२।

[४]डेटन, एडवर्ड आर., और फ्रेजर, डेविड ए., प्लानिंग स्ट्रेटेजीज फॉर वर्ल्ड एवंजेलिज्म। ग्रैंड रैपिड्स: डब्ल्यू.एम. बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, १९९०, पृष्ठ ४, ५।

[५]मैकगवरान, डोनाल्ड, द क्लैश बिटवीन क्रिश्चियनिटी एंड कल्चर्स। ग्रैंड रैपिड्स: बेकर बुक हाउस, १९७४।

[६]एंगेल, जेम्स एफ., कंटेम्परेरी क्रिश्चियन कम्युनिकेशंस। नैशविले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, १९७९, पृष्ठ १८२-१८३।

[७]डेटन और फ्रेजर, पृष्ठ १२९।

[८]पैटरसन, जॉर्ज, अ चर्च प्लांटिंग गाइड। ग्रैंड रैपिड्स: बेकर बुक हाउस, १९८९।